रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी
Rambhau Mhalgi Prabodhini

CAPART
Council for Advancement of People's Action and Rural Technology

GSDS

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भागीदारी

राष्ट्रीय कार्यशाला

राजघाट, 16 -17 नवम्बर, 2015

आत्मदीपो भव।

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी
Rambhau Mhalgi Prabodhini

Publication of monographs, occasional papers, books and research volumes is one of the major activities of Rambhau Mhalgi Prabodhini.

Some of the publications are a result of assignments completed under either of our fellowships, while some are purely an exercise in creating awareness about a particular issue in the minds of people.

and many more...

Books | DVDs

For more information
Please visit

www.rmponweb.org/publication

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी
Rambhau Mhalgi Prabodhini

Council for Advancement of People's Action and Rural Technology

GSDS

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भागीदारी

राष्ट्रीय कार्यशला

राजघाट, 16 –17 नवम्बर, 2015

ग्रामीण विकास में स्वैच्छि

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी
Rambhau Mhalgi Prabodhini

Council for Advancement of People's Action and Rural Technology

GSDS

- ऑल जे एण्ड के सर्विसमैन वेलफ़ेयर सोसाइटी, जम्मू एवं कश्मीर
- ज़ुबैदा नेशनल इंस्टिट्यूट, जम्मू एवं कश्मीर

- यूनिवर्सल डेवलपमेंट रिसर्च एण्ड चैरिटेबल ट्रस्ट (यूडीआरसी), राजस्थान
- तावड़ी विकास एण्ड सेवा ऑर्गेनाइज़ेशन, लाठी, राजस्थान
- महिला एण्ड एनवायर्नमेंट विकास ऑर्गेनाइज़ेशन, राजस्थान
- पेरासर विकास संस्त्रियान ऑर्गेनाइज़ेशन, राजस्थान
- ऐबगस ऑर्गेनाइज़ेशन, राजस्थान

- आशीर्वाद इंडिया ट्रस्ट, दिल्ली
- फ़ियान ट्रस्ट, दिल्ली
- सेवा इंटरनेशनल, नई दिल्ली
- अखिल भारतीय ग्रामीण उत्थान समिति, नई दिल्ली
- अभिव्यक्ति फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली
- रामास्वामी एजुकेशनल एण्ड डेवलपमेंट ट्रस्ट (आरईएडी), दिल्ली
- कपार्ट, दिल्ली
- आईआईटी, दिल्ली
- सेवा इंटरनेशनल, दिल्ली
- ग्रोथ फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया, मालवीय नगर, नई दिल्ली
- ग्रोथ फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया, दिल्ली
- दिव्य ज्योति संस्थान,पॉकेट ओसीएफ़, दिल्ली

- त्रिरत्न प्रेरणा मंडल, महाराष्ट्र
- श्री विवेक अत्रे, महाराष्ट्र
- छत्रपति शिक्षण मंडल, महाराष्ट्र
- डॉ. हेडगेवार सेवा समिति, महाराष्ट्र
- दरवंकुर सामाजिक संस्था, महाराष्ट्र
- गोविन्द महाराज गोपाल समाज विकास परिषद्, महाराष्ट्र
- श्री संजय काम्बले जन-आधार-सेवाभावी संस्थान्, महाराष्ट्र
- जीजामाता सेवाभावी संस्था, महाराष्ट्र
- नवदृष्टि, महाराष्ट्र
- मदुरई नॉन फ़ॉर्मल एजुकेशन सेंटर(एमएनईसी), मुंबई
- सेंटर फ़ॉर बी डेवलपमेंट देशपाण्डे लेआउट नलवाड़ी, महाराष्ट्र
- शिक्षक संचालित शिक्षण संस्था, महाराष्ट्र
- सिद्धगिरी गुरुकुल फ़ाउंडेशन, महाराष्ट्र

- शिवगंगा समग्र ग्रामविकास परिषद, मध्य प्रदेश

- प्रतिभा महिला एवम् बाल विकास समिति, छत्तीसगढ़
- सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन, छत्तीसगढ़
- ए.1, कल्याण आश्रम, जसपुर, छत्तीसगढ़
- ए.बी.वानारसी कल्याण, छत्तीसगढ़

- ग्रामियम, तमिलनाडू
- अथेनकोट्टासन मुथामिझ कझागम, तमिलनाडू
- विध्या, तमिलनाडू
- आरईडीएटी, तमिलनाडू
- मदुरई नॉन फॉर्मल एजुकेशन सेंटर, तमिलनाडू

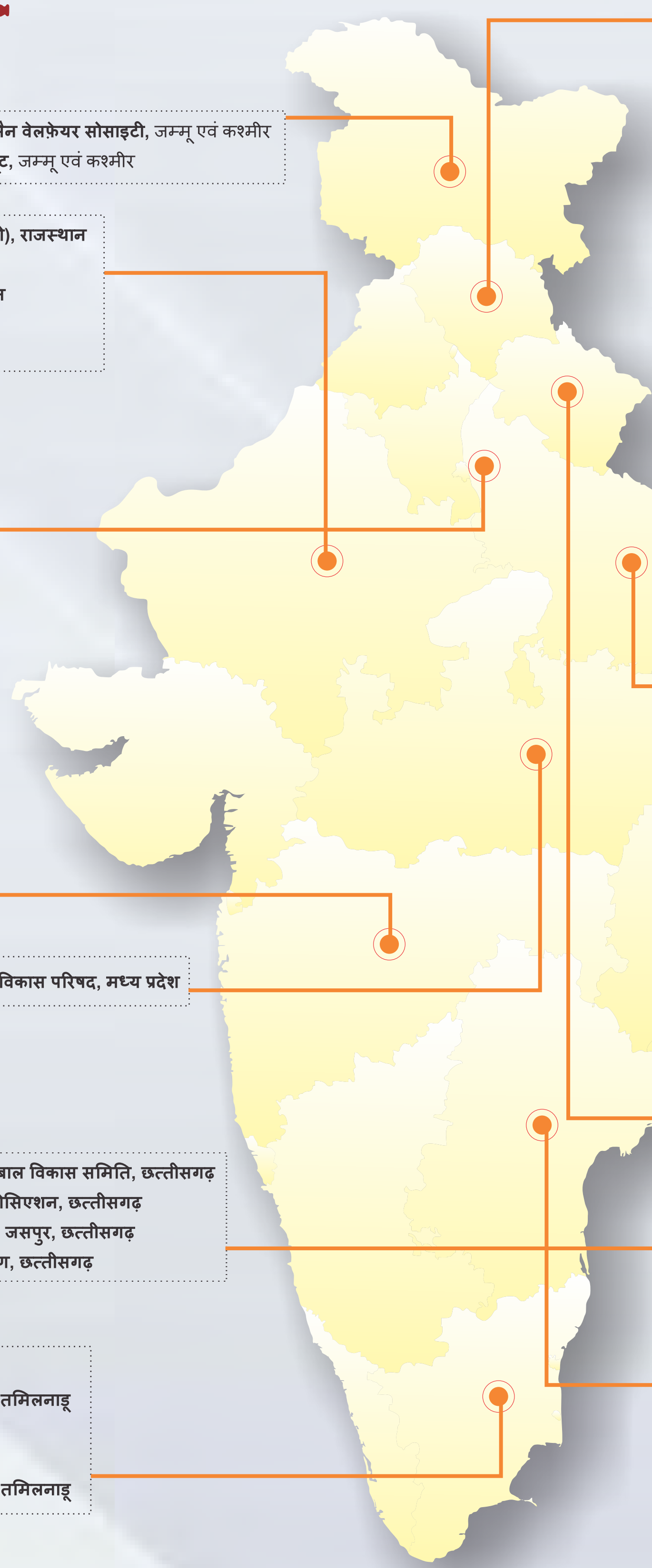

क संगठनों की भागीदारी

राष्ट्रीय कार्यशाला

राजघाट, 16 -17 नवम्बर, 2015

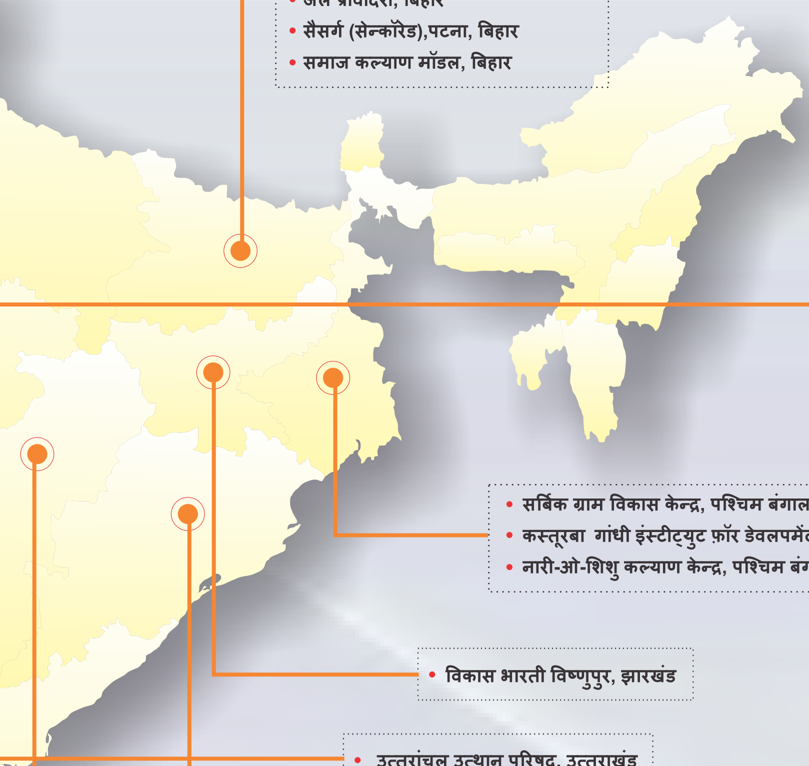

- यूथ फ़ॉर सस्टनेबल डेवलपमेंट, हिमाचल प्रदेश

- दिशा ग्रामीण विकास मंच, बिहार
- सत्य श्री साई सोशल वेलफ़ेयर ट्रस्ट, बिहार
- ग्राम विकास मंच, बिहार
- क्रिएट, बिहार
- महिला बाल युवा केन्द्र, बिहार
- ग्राम दीदी स्वयम् सेवी संस्थान, बिहार
- मुक्ति निकेतन, बिहार
- मुरीजुशा आर्ट रिसर्च फ़ाउंडेशन, बिहार
- परिवार विकास, बिहार
- जल प्रीवादरी, बिहार
- सैसर्ग (सेन्कॉरेड),पटना, बिहार
- समाज कल्याण मॉडल, बिहार

- पीपल एक्शन फ़ॉर नेशनल इंटिग्रेशन (पीएएनआई), उत्तर प्रदेश
- लोकप्रिय जनहित सेवा संस्थान(एलजेएसएश), उत्तर प्रदेश
- ग्रामीण पुनर्निर्माण संस्थान, उत्तर प्रदेश
- प्राच्य विद्या शोध सदन केन्द्र, उत्तर प्रदेश
- भगवान् मानव कल्याण समिति, उत्तर प्रदेश
- महिला ग्रामोद्योग सेवा समिति (एमजीएसएस), उत्तर प्रदेश
- अल्पसंख्यक पिछड़ा वर्ग मार्ग कल्याण समिति, उत्तर प्रदेश
- आदर्श ग्रामोद्योग विकास संस्थान, उत्तर प्रदेश
- जन कल्याण एवम् ग्रामीण उत्थान संस्थान, उत्तर प्रदेश
- श्री प्रतीक चौधरी, उत्तर प्रदेश
- ग्रामीण विकास प्रयास समिति, उत्तर प्रदेश
- ग्रामोदय रचनात्मक विकास संस्थान, उत्तर प्रदेश
- ग्रामीण विकास संस्थान, उत्तर प्रदेश
- श्री विष्णु कुमार तिवारी सर्वोदय शिक्षा संस्थान, उत्तर प्रदेश
- उड़ान सोसाइटी, उत्तर प्रदेश
- वसेरा, उत्तर प्रदेश
- सिद्धेश्वर ग्रामीण अभिवृद्धि संघ, उत्तर प्रदेश
- प्रपंभ समाज सेवी संस्था, उत्तर प्रदेश
- साधोव्नसी सेवा एरम् शिक्स, उत्तर प्रदेश
- डॉ. भीमराव अंबेडकर ग्राम विकास समिति, उत्तर प्रदेश
- वीएनएस किजान विद्यालय समिति, उतर प्रदेश
- सघन क्षेत्र विकास संस्था, उत्तर प्रदेश
- उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक, उत्तर प्रदेश
- भुर्तिजा खोड़ी ग्रामोद्योग परिश्थान, उत्तर प्रदेश
- सद्भावना ग्रामीण विकास संस्थान, उत्तर प्रदेश
- वनवासी सेवा ऑर्गेनाइज़ेशन, उत्तर प्रदेश

- सर्बिक ग्राम विकास केन्द्र, पश्चिम बंगाल
- कस्तूरबा गांधी इंस्टीट्युट फ़ॉर डेवलपमेंट, इंफ़ाल
- नारी-ओ-शिशु कल्याण केन्द्र, पश्चिम बंगाल

- विकास भारती विष्णुपुर, झारखंड

- उत्तरांचल उत्थान परिषद्, उत्तराखंड

- श्री आदित्य पटनायक अत्योदय चेतना मंडल, ओड़िशा
- वीमेन'स फ़्रंट(महिला समख्या), ओड़िशा
- अंत्योदय चेतना मण्डल, ओड़िशा

- गोपाल सेवा
- शिवगंगा श्रम ग्रामीण विकास परिषद्
- आईआईटी कॉलेज स्टूडेण्ट को-ऑर्डिनेटर
- सखी री विकास संस्थान्
- जीएसडीएस गांधी दर्शन
- यरसत्ते
- सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन,
- सुबे सिंह भगत
- शशी कुलकर्णी
- शिवगंगा ग्रामविकास ऑर्गेनाइज़ेशन
- श्रीयान म्युज़िक ग्रुप
- जीएसडीएस
- आईएसआरएन
- संतोष सिंह

- रुरल डेवलमेंट सर्विस सोसाइटी, आंध्र प्रदेश
- मि. एम. श्रीनिवास रेड्डी मेनकाना सोशल सर्विस, आंध्र प्रदेश
- भविष्य भारत, आंध्र प्रदेश
- जी. ओ. यू. फ़ेडरेशन, हैदराबाद
- विज़न रुरल डेलवपमेंट सोसाइटी, तेलांगना
- श्री/श्रीमती के. वेंकटप्पा, आंध्र प्रदेश
- क्रियेटिव सीड्स, क्रियेटिव सोशल, एजुकेशनल एण्ड इकोनॉमिकल सोसाइटी, आंध्र प्रदेश
- आदिवासी रुरल डेवलपमेंट, आंध्र प्रदेश

CAPART
Council for Advancement of People's Action and Rural Technology

भारत के कुल क्षेत्रफल का बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र है और देश की जनसंख्या के लगभग तीन चौथाई भाग के निवासी भी इन्हीं ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। परिणामस्वरूप, देश के विकास की सार्थकता तभी है, जब इन इलाक़ों और इस बड़ी आबादी तक विकास योजनाओं की पहुंच बन सके। ग्रामीण क्षेत्रों तथा विभिन्न संदर्भों में वहां रह रहे लोगों की विविधता को देखते हुए स्पष्ट है कि किसी भी सरकार या प्रशासन के लिए इन तक अपनी पहुंच बना पाना आसान नहीं है। इसी कारण ग्रामीण विकास में स्वयंसेवी संस्थाओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि सामान्य रूप से एनजीओ के नाम से जाने जाने वाली ये स्वयं सेवी संस्थाएं, समुदाय और व्यक्तियों के बीच परिवर्तन की पहल तथा विशिष्ट मुद्दों के परिप्रेक्ष्य में सरकारी योजनाओं के प्रत्यक्ष कार्यान्वयन के माध्यम से कार्य करती हैं।

कपार्ट यानी काउंसिल फ़ॉर एडवांसमेंट ऑफ़ पीपल्स एक्शन एण्ड रुरल टेक्नोलॉजी (Council For Advancement Of People's Action & Rural Technology) इन्हीं स्वयंसेवी संस्थाओं तथा विभिन्न सरकारी संगठनों के बीच सहायक समितियों के वर्गीकरण तथा सामंजस्य के लिए 1986 में अस्तित्व में आयी। कपार्ट (Council For Advancement of People's Action & Rural Technology) की स्थापना दो एजेंसियों से मिलकर हुई।ये दो एजेंसियां थीं: काउंसिल फॉर एडवांसमेंट ऑफ रूरल टेक्नोलॉजी' (सी.ए.आर.टी) तथा पीपल्स एक्शन फॉर डेवलपमेंट (इंडिया) (पी. ए. डी. आई.)

कपार्ट 1860 के संस्था पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्था मानी गई, यह ग्रामीण विकास मंत्रालय के निर्देशों के अंतर्गत कार्य करती है, जो भारत सरकार द्वारा मान्य है। आज यह संस्था भारत में ग्रामीण विकास को फैलाने में बड़ा योगदान करती है, पूरे देश में 12,000 स्वयंसेवी संगठनों द्वारा बड़े पैमाने पर विकास कार्यक्रमों को आरंभ किया गया है।

कपार्ट की कई महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना, जनसहयोग है।इसका प्रमुख आकर्षण जातिवाद को समाप्त करना है, ग्रामीण संस्थाओं के दलितों तथा पिछड़े वर्गों के आय संबंधी कार्यक्रमों को उनतक विस्तार देना है ताकि उन्हें रोजगार हासिल हो सके। यह सीधे-सीधे नवीनता तथा स्थिरता प्रदान करने पर बल देती है, जो स्थायी तथा संतुलित आधार पर क्षमता का उपयोग करते हैं।

ऐसा अनुभव किया गया है कि ग्रामीणों की गृह संबंधी जीवनशैली को सुधारने और ऊपर उठाने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है। एक निश्चित मानसिकता को लाने के लिए, समूह गठन एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा फैसला करने की प्रक्रिया, समुचित प्रतिपादन प्रस्तुत करना, स्थानीय संसाधन जैसे सामान उपलब्ध कराने की आवश्यकता, व्यक्ति तथा व्यापार तथा उनको निर्धारित करना आसान हो जाता है। सामूहिक रूप से कला-विकास तथा क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों के लिए सामर्थ्य प्रदान करना, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) द्वारा निर्धारित योजनाओं का विकास करना, प्रयास तथा व्यापारिकता द्वारा उत्पादों का संतुलित मूल्यांकन तथा अतिरिक्त उपलब्धि आवश्यक है। नवीनतम तकनीकी विकास की प्रासंगिकता तथा अवसर प्रदान करने के लाभ के बारे में प्रक्रियाओं, शैलियों तथा ढंग को भी प्रोत्साहन दिया जाता है। इन कार्यक्रमों के कार्यान्वन के लिए इन्हें दोहराए जाने की क्षमता विशेष रूप से इन्हें ठोस आधार देती हैं।

यह योजना संपूर्ण ग्रामीण विकास कार्यक्रम को योजनाबद्ध तरीक़े से स्थापित सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य कार्यक्रमों/कार्यशैलियों, विविध राज्यों/केन्द्रीय सरकारी संगठनों के साथ कार्य करती है। इससे प्रयासों को बढ़ाने, संबंधों को जोड़ने, कार्यशैलियों को गांवों में फैलाने में आसानी होती है ताकि सभी उपलब्ध सुविधाएं और साधन समुचित रूप से प्रयुक्त किए जा सकें। आर्थिक संगठनों द्वारा समुचित साधन तथा बैंक की आवश्यक भूमिका द्वारा सामुदायिक रूप से समग्र विकास को सम्पन्न कराया जा सकता है।

ग्रामीण प्रौद्योगिकी पर प्रमुख रूप से समाज के उन ग्रामीण क्षेत्रों में बल दिया जाता है, जहां नवीन तकनीकी विकास लाभ से लोग वंचित हैं। कपार्ट ऐसे विकासाधीन ग्रामीण प्रौद्योगिकी के कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देती है, जैसे कि लाभहीन तथा प्रयोगशाला से निरीक्षित नवीन तकनीकी के प्रसार को पहुंचाना, जो अन्य संगठनों द्वारा नहीं दी जाती है।

ग्रामीण महिला दोगुनी समस्या से जूझती हैं, एक तरफ़ उनपर घर के काम का बोझ होता है, तो दूसरी तरफ़ घर से बाहर की

समस्याओं से उनका सामना होता है। इस स्थिति को समझते हुए तकनीकी विकास की मुख्य भूमिका समयानुसार नारी को विकास कार्यक्रम में भाग लेने लायक बनाने की शक्ति प्रदान करना है तथा ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग का मुख्य आकर्षण महिला विकास तकनीक को लाना है।

कपार्ट हर उस प्रयास में सहयोग देती है, जो ग्रामीण दलितों, अशक्त तथा क्षमता निर्माण में जागरूकता का निर्माण करने वाले विकास कार्यक्रमों को स्वयंसेवी संगठनों द्वारा प्रशिक्षण तथा सूचना के रूपांतरण के लिए संगठित किया जाता है। स्वयंसेवी संगठन, वहां के स्थानीय विषयों को लेकर पर्याप्त रूप से गंभीर तथा जीवंत अभियान तथा अथक परिश्रम द्वारा आर्थिक अवस्था तथा सामाजिक शक्ति को उन लोगों के लिए पहुंचाने का प्रयास करते हैं, जिनसे यह छीन लिया गया है या जो वंचित हैं।

कपार्ट अपनी एक विशेष योजना के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता लाती है। इसका ध्यान किफायत का सौदा करना, शक्ति के लिए सहयोग को बढ़ावा देना तथा दलित वर्ग तथा पिछड़े वर्गों की महिलाओं को सहयोग देना, भूमिहीन मजदूरों, शारीरिक रूप से अयोग्य व्यक्तियों तथा अन्य सुविधाहीन समाज के उत्थान के क्षेत्रों में सहयोग देना है। यह योजना उन दरिद्र तथा विवादग्रस्त लोगों के लिए कानूनी सलाह तथा निर्देशन देने, बड़ी संख्या में दरिद्र तथा बंधुआ मजदूरों को कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए न्याय का सहारा भी देती है।

ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए सुविधाओं तथा समानता के अवसर उपलब्ध कराने के लिए १९९५ में एक नि:शक्तता कार्रवाई विभाग स्थापित किया गया। इस प्रक्रिया का लक्ष्य था; स्वयं सहायता समूह द्वारा जागरूकता उत्पन्न कराना तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करना ताकि असहाय व्यक्ति न केवल स्वयं सहायक बन सकें, अपितु समाज के विकास की प्रक्रिया में बराबर में भागीदार बन सकें। इसके प्रमुख लक्ष्य हैं :सामुदायिक आधार पर कार्यक्रमों को युवा उद्यमी संगठनों के द्वारा नवीनीकरण प्रदान करना, जो कल्याण के अतिरिक्त विकास क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता रखते हैं।

कपार्ट "नि:शक्त व्यक्तियों (समान अवसर, अधिकारों की रक्षा तथा पूर्ण प्रतिभागिता) के लिए कार्यरत १९९६ की वह राष्ट्रीय संस्था है जो लोगों की अक्षमताओं को दूर करने के लिए हर संभव संसाधन उपलब्ध कराती है।

स्वयंसेवी क्षेत्र में व्यावसायिकता को प्रोत्साहन देने के लिए परिषद द्वारा आईआरएमए, टीआईएसएस, आईआईएफएम, डीएसएसडब्ल्यू आदि जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से प्रत्येक वर्ष परिसर भर्ती की जाती है और इन भर्ती किए गए व्यक्तियों को स्वयंसेवी संगठनों तथा अपने कार्यालयों में कार्य करने के लिए प्रतिनियुक्त किया जाता है। प्रत्येक युवा उद्यमी को 9000 रु. का मासिक स्टाइपैंड मिलता है। स्वयंसेवी संगठन को एक तिमाही तक यह राशि देनी होती है। युवा उद्यमी अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद अपना स्वयं का स्वयंसेवी संगठन आरंभ करने के लिए स्टार्टर पैकेज के लिए आवेदन कर सकते हैं। कपार्ट का मीडिया प्रभाग कपार्ट के परियोजना प्रभारी को संचार सामग्री उपलब्ध कराकर तथा स्वयंसेवी क्षेत्र द्वारा प्रयोग हेतु दृश्य-श्रव्य तथा मुद्रित अधिगम/प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराकर सहायता करने के लिए उत्तरदायी है। इस प्रभाग ने राष्ट्रीय स्तर के फिल्म निर्माताओं तथा साथ ही नवोदित रचनात्मक युवाओं द्वारा विभिन्न विकास विषयों पर अनेक फिल्मों के निर्माण में सहायता की है।

कपार्ट अनेक पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा जर्नलों को भी प्रकाशित करती है, जिनका व्यापक प्रचालन स्वयंसेवी क्षेत्र में किया जाता है। मीडिया प्रभाग द्वारा 25 विकास संसाधन केंद्रों का एक नेटवर्क अर्थात संचार संसाधन नेटवर्क (सीआरएन) आरंभ किया गया है, जो विभिन्न क्षेत्र आधारित समूहों द्वारा विकसित विकास संचार सामग्री के संग्रहण एवं प्रसार में तत्परता पूर्वक लगा हुआ है।

इस तरह, कपार्ट ग्रामीण विकास के नये मायने की तलाश करती न सिर्फ़ एक महत्वपूर्ण संस्था है,बल्कि स्वयं सेवी संस्थाओं को सक्षम बनाते हुए उनके ही माध्यम से ग्रामीण सोच में व्यापक बदलाव लाने का एक बड़ा ज़रिया भी है।

कपार्ट मुख्यालय :

लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद (कपार्ट)
इंडिया हैबिटेट सेंटर (भारत पर्यावास केंद्र), जोन-V-ए, दूसरा तल
लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003.
फोन नं. : 91 - 11 - 2464 2391, 2464 2393, 2464 2395
फैक्स : 91 - 11 - 2464 8607, 2462 5822
ई-मेल : helpdesk@capart.nic.in
वेबसाइड : http://capart.nic.in/

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी
Rambhau Mhalgi Prabodhini
आत्मदीपो भव ।

देश में कार्यकर्ताओं की कमी नहीं है और कार्यकर्ता चूंकि धरातल पर उन्हीं लोगों के बीच कार्य करते हैं, जिनकी समस्याएं सुलझानी हैं। परिणामस्वरूप लोगों के बीच रहने का अनुभव, उनकी चिंताओं के साथ तालमेल बिठाने का कौशल तथा समस्या को उसी रूप में समझने की सहजता जैसे पक्ष मिलकर किसी कार्यकर्ता को उन्हें भविष्य का नेता बनाने की संभावना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने ऐसी ही संभावना को वास्तविकता के धारातल पर लाने की एक सुंदर कल्पना की थी। इस कल्पना का आधार उन्होंने एक अकादमी की परिकल्पना को बनाया था। दूरद्रष्टा पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने समय से पहले इस बात की कल्पना कर ली थी कि आने वाले दिनों में भारत को अपनी परंपरा, संस्कृति तथा भौगोलिक विशेषताओं की समझ वाले नेतृत्व की आवश्यकता होगी तथा इस आवश्यकता की पूर्ति तात्कालिक परिस्थितियों में संभव नहीं जान पड़ रही थी। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपनी परिकल्पना वाली अकादमी की स्थापना का दृढ़ संकल्प किया था। जबतक ये संकल्प नेतृत्व उत्पन्न करने वाली संभावना का मज़बूत विकल्प बन पाता, इससे पहले ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की निर्मम हत्या कर दी गई। किन्तु, पंडित जी की हत्या का अर्थ यह बिल्कुल ही नहीं था कि उनके विचार और चिंतन भी समाप्त कर दिये गए। बल्कि इसके ठीक विपरीत हुआ। जैसे-जैसे समय बीतता गया, पंडित जी और भी प्रासंगिक होते गए। उनके साथ काम करने वालों ने भी उनके विचार को आगे बढ़ाया। ऐसे ही लोगों में से थे-महाराष्ट्र निवासी रामचंद्र काशीनाथ म्हाल्गी अर्थात् रामभाऊ म्हाल्गी। रामभाऊ म्हाल्गी आर.एस.एस.के प्रचारक थे और उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया था और इसी समर्पण के सुंदर परिणाम के रूप में सामने आयी एक व्यापक संस्था - रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी। सामान्यतया आरएमपी(Rambhau Mhalgi Prabodhini) के नाम से सुविज्ञात इस संस्था की स्थापना 1982 में की गई।

प्रबोधिनी मुख्य रूप से सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के क्षेत्र में काम करने वाली देश की एक प्रमुख संस्था है।प्रबोधिनी ने अपनी स्थापना के वर्ष से ही स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं तथा जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों की क्षमता अभिवृद्धि में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पिछले कई सालों में इस संस्थान ने अपने बेहतरीन कार्यों के कारण न सिर्फ़ अपना एक बहुआयामी व्यक्तित्व पाया है, बल्कि इस उपलब्धि के कारण पूरे देश में एक गहरी पहचान भी बनायी है। प्रबोधिनी ने यह अनुभव किया है कि भारत के संपूर्ण विकास में सिर्फ़ सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं तथा जनप्रतिनिधियों की ही भूमिका नहीं है, बल्कि तंत्र को चलाने में सिविल सेवकों तथा तंत्र पर दृष्टि रखने के लिए पत्रकारों को भी प्रशिक्षण देकर उन्हें अपनी भूमिका ठीक तरह से निर्वाह करने की आवश्यकता है। आरएमपी इस क्षेत्र में भी व्यापक रूप से सक्रिय है। आरएमपी देश के आगे बढ़ने में व्यापारिक घराने को भी अहम मानती है। यही कारण है कि इसके प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा व्यापारिक घराने भी हैं। मोटे तौर पर रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी (आरएमपी) का मिशन और उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- सभी स्तरों पर लोकतंत्र को मज़बूती देना;
- समुचित प्रशिक्षण तथा संसाधनों के साथ सामाजिक कार्यकर्ताओं का सशक्तिकरण;
- किताबों, पत्रिकाओं, शोध पत्रों या सार्वजनिक महत्व के किसी भी तरह के साहित्य का प्रकाशन;
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना;
- योग्य लेखकों, पत्रकारों, कलाकारों, खिलाड़ियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं या उनकी संस्थाओं को सशक्त करना एवं उनका प्रशिक्षण;
- जन-जागरूकता के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए शोध एवं सर्वेक्षण कराना तथा;
- सीएसआर यानी कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सबिलिटी (कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व) की अवधारणा को प्रोत्साहित करना।

आरएमपी ने विभिन्न क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अद्भुत परिणाम दिये हैं। ऐसे ही कार्यक्रमों में शामिल रहे हैं: ग्राम पंचायत सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सहकारी बैंकों के निदेशक के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम,

कॉलेज प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्र नेताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, संचार कौशल और सार्वजनिक संभाषण कला में प्रशिक्षण, मंत्रियों के निजी सचिवों का अभिविन्यास कार्यक्रम, महिला कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, विश्वविद्यालय सीनेट सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, ग़ैर लाभ प्राप्त संगठनों और स्वैच्छिक क्षेत्र में कार्यरत प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण शिविर, सहकारी बैंकों की महिला निदेशकों के लिए प्रशिक्षण, महाराष्ट्र राज्य के गठन की स्वर्ण जयंती की पूर्व संध्या पर नए तथा युवा पत्रकारों के लिए कार्यशाला का आयोजन, सामाजिक नेतृत्व में सर्टिफ़िकेट कोर्स, स्वयंसेवी संगठनों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए परियोजना प्रस्ताव लेखन पर कार्यशाला, जम्मू-कश्मीर एवं उत्तर भारत के विशेष संदर्भ में भारत की सुरक्षा रणनीति को लेकर समझ विकसित करने पर कार्यशाला का आयोजन, सामाजिक-राजनीतिक नेतृत्व सर्टिफ़िकेट कोर्स का संचालन।

प्रबोधिनी ने संपूर्ण देश में क्षमता निर्माण को लेकर इस तरह के सैकड़ों कार्यशालाओं, शिविरों तथा कार्यक्रमों को आयोजित किया है। प्रबोधिनी ने ऐसा नहीं कि सिर्फ़ इस तरह के क्षमता निर्माण कार्यक्रमों पर ही बल दिया हो। प्रबोधिनी यह अनुभव करती रही है कि बना जन-जागरूकता के इन प्रशिक्षणों को ज़्यादा मतलब नहीं है। अत: निर्माण की गई यह क्षमता वहां आसानी से उपयोग हो सकते हैं, जहां जागरूकता के वायु प्रवाह में नामसझी का अवरोध न हो। ऐसे ही अवरोधों को दूर करने के लिए प्रबोधिनी निरंतर प्रयास करती रही है। विगत कुछ वर्षों में प्रबोधिनी ने जिन क्षेत्रों में जन-जागरूकता का प्रसार किया है, उनमें से कुछ महत्वपूर्ण विषय उल्लेखनीय हैं और वे हैं:

- महाराष्ट्र में पेयजल का संकट
- धर्मनिर्पेक्षता की अवधारणा की विकृति
- व्यावसायिक शिक्षा का व्यावसायीकरण
- राजनीति के अपराधीकरण का संकट
- बांग्लादेश और इसके प्रभाव से बड़े पैमाने पर घुसपैठ के मुद्दे
- शहरी महिलाओं के लिए रोज़गार के अवसरों को बढ़ाना
- जनोन्मुख प्रशासनिक सुधार
- स्वैच्छिक सक्रियता के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण
- महाराष्ट्र की जल-नीति पर संगोष्ठी
- आदिवासी विकास सम्मेलन
- सामाजिक-कार्य शिक्षा की सीमाएं और प्रासंगिकता
- धर्म आधारित आरक्षण के ख़िलाफ़ सम्मेलन
- वन-क़ानून, आदिवासी समुदायों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी:
- 'आजीविका और संरक्षण'
- आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष
- सुशासन के माध्यम से विकास

प्रबोधिनी के विभिन्न कार्यक्रमों में जिन लोगों ने अपने अनुभवों तथा समझ की गंगा बहायी, उन लोगों की सहभागिता की सूची ही यह बताने के लिए पर्याप्त है कि कार्यक्रमों की गहराई और उनकी गंभीरता का क्या स्तर रहा होगा सूची में उल्लेखित ऐसी ही विभूतियों में कुछ महत्वपूर्ण नाम निम्नलिखित हैं:

अन्नासाहब शिंदे, लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, पूर्णिमा आडवाणी, जयंत पाटिल, एम. वी. कामथ, बलवीर पुंज, मुज़फ़्फ़र हुसैन, जूलियो रेरियो, स्वर्गीय विजय तेंदुलकर, डॉ. सुभाष कश्यप, डॉ. डी. एन. धंगागरे, डॉ. वी. जी. भिंडे, बिशप थॉमस डाबरे, पोपटराव पवार, लेफ़्टिनेंट जनरल एक. के. सिन्हा, वी. रमन, कुमार केतकर तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आदि।

प्रबोधिनी सामाजिक अनुसंधान को बहुत महत्वपूर्ण मानती है। यही कारण है कि इसके लिए प्रबोधिनी में एक अलग प्रकोष्ठ है। यह प्रकोष्ठ मुख्य रूप से एक व्यावसायिक दृष्टिकोण के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक अध्ययन और सर्वेक्षण का काम करता है। प्रबोधिनी की कुछ महत्वपूर्ण अनुसंधान रिपोर्टों में से निम्नलिखित हैं: महाराष्ट्र में नक्सली आंदोलन का विकास (1989), तमिलनाडु की राजनीति में लिट्टे की भूमिका (1990), ग्राम स्तरीय जल संरक्षण परियोजनाएं: सरकारी एवं गैर सरकारी परियोजनाओं का एक तुलनात्मक विश्लेषण (1993), एनरॉन विद्युत परियोजना (1994), पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा सरकार: उत्पत्ति, विकास और क्षय (1997), स्थानीय निकायों में 33 प्रतिशत आरक्षण के माध्यम से महिला सशक्तीकरण (1996), 2002 में सोलापुर दंगों के दौरान मानव अधिकार उल्लंघन (2002) एवं छत्तीसगढ़ में विकास एवं आंतरिक सुरक्षा पर नक्सली आंदोलन का प्रभाव (2006) इत्यादि। प्रबोधिनी के बारे में संपूर्ण जानकारियां निम्न वेबसाइट पर उपलब्ध हैं:

वेबसाइड :
www.rmponweb.org

GSDS

गांधी समृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) की स्थापना एक स्वायत्त निकाय के रूप में सितंबर 1984 में राजघाट स्थित गांधी दर्शन एवं 5, तीस जनवरी मार्ग स्थित गांधी समृति नामक दो संस्थाओं को मिलाकर हुई थी। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की रचनात्मक सलाह एवं उनके वित्त पोषण के अंतर्गत अपना कार्य करती है। भारत के प्रधानमंत्री इसके प्रमुख होते हैं तथा इसकी गतिविधियों के दिशा निर्देश के लिए समिति के पास वरिष्ठ गांधीवादियों तथा विभिन्न सरकारी विभागों के प्रतिनिधियों का एक नामांकित निकाय है। समिति का आधारभूत लक्ष्य एवं उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन तथा उनके विचारों का प्रचार-प्रसार करना है।

समिति के पास दो परिसर हैं; गांधी स्मृति एवं गांधीवादी अध्ययन एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र।

समिति का गांधी स्मृति परिसर 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली स्थित बिड़ला हाऊस का वही पवित्र स्थान है, जहां 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी के महान जीवन का अंत हुआ था। महात्मा गांधी ने 9 सितंबर 1947 से लेकर 30 जनवरी 1948 तक का जीवनकाल यहीं बिताया था। इस प्रकार, अपने स्मृतियों के खज़ानों को समेटे हुए यह परिसर महात्मा गांधी के अंतिम 144 दिनों का गवाह रहा है। पुराने बिड़ला हाउस को सरकार ने 1971 में अधिगृहित कर लिया था और इसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के राष्ट्रीय स्मारक में रुपांतरित कर दिया गया एवं 15 अगस्त 1973 को इसका द्वार होगा जनसामान्य के लिए खोल दिया गया।

गांधीवाद से संबंधित अध्ययन एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र नामक समिति (जीएसडीएस) का द्वितीय परिसर राजघाट में महात्मा गांधी समाधि के ठीक बगल में स्थित है। छ:एकड़ में फैला यह परिसर महात्मा गांधी की जन्मशती के अवसर पर 1969 में अस्तित्व में आया था। इस परिसर में मौजूद छ: विशाल पवेलियन मानों महात्मा गांधी के 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' का जीवंत संदेश देते हैं। इसकी नींव रखते हुए इस बात की परिकल्पना की गई थी कि बीतते समय के साथ यह परिसर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विकसित होगा। यह परिकल्पना उस समय वासत्विकता बन गई, जब 1994 में महात्मा गांधी की 125वीं जयंती मनायी जा रही थी, क्योंकि उसी अवसर पर इस परिसर को गांधीवाद से सबंधित अध्ययन एवं शोध के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र (आईसीजीएसआर) में बदल दिया गया। आईसीजीएसआर यानी गांधीवादी अध्ययन एवं शोध का यह अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र भारत तथा विदेशों से आने वाले शोधार्थियों के लिए शोध एंव दिशा-निर्देश की सुविधाएं उपलब्ध कराता है, शांति के लिए की जा रही विभिन्न पहल के दस्तावेज़ीकरण तथा एक ही स्थान पर गांधी एवं उनसे संबंधित विषयों पर सामग्री एवं सुविधाएं उपलब्ध कराता है। इस समय, आईसीजीएसआर में गांधी जी पर व्यापक प्रदर्शनी, सम्मेलन कक्ष, बड़े राष्ट्रीय एवं अतर्राष्ट्रीय बैठकों के लिए शिविर सुविधाएं, एक पुस्तकालय, बाल दीर्घाएं, फ़ोटो इकाई तथा एक प्रकाशन विभाग की भी व्यवस्था है। जीएसडीएस 'अनासक्ति दर्शन' नामक एक पत्रिका का प्रकाशन भी करती है। जीएसडीएस की संपूर्ण प्रणाली एक प्रशसानिक निकाय द्वारा संचालित होती है और इस प्रणाली के प्रमुख स्वयं प्रधानमंत्री होते हैं।

युवा पीढ़ी का ध्यान रचनात्मक कार्यों के प्रति आकर्षित करने के लिए उन बातों का भी सहारा लिया जा सकता है, जिनकी चर्चा 12 अप्रैल 1942 को गांधी जी ने अपने पत्र 'हरिजन' में किया था। उन्होंने इसकी चर्चा करते हुए लिखा था, 'सबसे अच्छी तैयारी एवं यहां तक कि अहिंसा की अभिव्यक्ति भी रचनात्मक कार्यक्रम के लगातार चलते रहने में ही है। जो कोई यह विश्वास करता है कि बिना किसी रचनात्मक कार्यक्रम की सहायता से वह अहिंसा की शक्ति का प्रदर्शन कर लेगा, तो वह दुर्भाग्यवश सफल नहीं हो पायेगा'। यह कुछ-कुछ भूखे-प्यासे तथा बिना किसी हथियार वाले उस सेना की स्थिति की तरह होगा, जिसका मुक़ाबला किसी अघाये और सुसज्जित सेना से होने वाला है। संपूर्ण जानकारियां निम्न वेबसाइट पर उपलब्ध हैं:

वेबसाइड :

www.gandhismriti.gov.in

विषय-सूची

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भागीदारी

श्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह, माननीय ग्रामीण विकास, पंचायती राज, स्वच्छता एवं पेजजल मंत्री 12

श्री सुदर्शन भगत, ग्रामीण विकास राज्य मंत्री 14

श्री अदृश्य काडसिद्धेश्वर स्वामी, सिद्धगिरी मठ 15

श्री मदनलाल मीणा, महानिदेशक, कपार्ट 16

डॉ. विनय सहस्रबुद्धे, महानिदेशक, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी 17

श्री दीपांकर श्री ज्ञान, निदेशक, गांधी स्मृति दर्शन समिति 18

श्री रवीन्द्र साठे, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी 19

श्रीमती रश्मी शुक्ला शर्मा, अतिरिक्त सचिव, पंचायती राज मंत्रालय 20

श्रीमती संध्या सिंह, निदेशक (राज्य), पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय 21

श्री सी.एस.पांडेय, निदेशक, कपार्ट 22

श्री मोहनलाल गुप्ता, निदेशक, कपार्ट 23

श्री पी.के.सारंगी, संयुक्त सचिव, ग्रामीण विकास विभाग 26

श्री विवेक अत्र, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी 27

श्री वेदभ्यास कुंडू, गांधी स्मृति दर्शन समिति 28

श्री रवि पोखरना, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी 28

श्री बसंत जी 29

"

भारत के संतुलित विकास के लिए गांव का विकास आवश्यक

श्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह,
माननीय ग्रामीण विकास,
पंचायती राज, स्वच्छता एवं पेजजल मंत्री

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भागीदारी अनिवार्य है। हमारा अनुभव रहा है कि एक संतुलित और विकसित भारत बने,इसके लिए गांवों का विकास आवश्यक है। बिना ग्रामीण विकास के शहरों का समावेशी विकास भी संभव नहीं है। देशभर में निबंधित 34 लाख स्वैच्छिक संगठन हैं, लेकिन रिटर्न फ़ाइल भरने वाले संगठनों की संख्या सिर्फ़ 88,000 ही है। आज स्वैच्छिक संगठनों के सामने सबसे बड़ा सवाल उनकी साख का है और इस सवाल का एक मात्र जवाब लोगों के बीच प्रतिबद्धता के साथ काम

करके ही दिया जा सकता है । स्वैच्छिक संगठन अपने देश की विविधता के कारण देश और समाज दोनों के लिए अनिवार्य हो जाते हैं, क्योंकि सरकार की पहुंच तंत्रगत है, जबकि स्वैच्छिक संगठनों का जुड़ाव सीधे-सीधे जनसामान्य तक है।

स्वैच्छिक संगठन वास्तव में प्रशासनिक रचनात्मकता की सामाजिक अभिव्यक्ति है और स्वैच्छिक संगठन अगर पहरेदार बन जाए तो किसी भी परियोजना या कार्यक्रम में ठेकेदारों या इस तरह की शक्तियों की गड़बड़ियों पर मज़बूती से नियंत्रण पाया जा सकता है। ऐसे में निगरानी की भूमिका जो कॉर्पोरेट को दी गई है, वह एनजीओ के पास क्यों नहीं है? देश का संपूर्ण विकास के लिए ग्रामीण विकास के माध्यम से ही हो सकता है और विगत 60 सालों का अनुभव बताता है कि सिर्फ़ आधारभूत संरचना बदल देने से विकास संभव नहीं, विकास की असली धारा रोज़गार सृजन से निकलती है।

आने वाले दिनों में ग्रामीण विकास के लिए गांवों से बने कलस्टर की विकास योजना ज़रूरी है और इसमें एनजीओ की भागीदारी अनिवार्य है। बदलते तकनीक के साथ एनजीओ के भी तकनीकी रुपांतरण पर ज़ोर देना चाहिए। सिस्टम ठीक से चले, इसके लिए तकनीक आज की अनिवार्य आवश्यकता है।

एनजीओ को अपना दायरा बड़ा करना चाहिए ताकि आज की तारीख़ में आपसी सहयोग के माध्यम से सिर्फ़ उत्पादन ही पर्याप्त नहीं है, उसका वितरण तथा तथा वितरण के लिए ज़रूरी सिस्टम भी अपरिहार्य है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल वास्तव में अद्भुत है और उनकी इस पहल में देश के साथ एनजीओ के पास भी एक स्वर्णिम अवसर है ताकि प्रधानमंत्री द्वारा की गई पहल में एनजीओ अपनी भूमिका का सुर मिलाकर इस सुंदर पहल को सुंदर परिणाम तक पहुंचा सके।

बदलते तकनीक के साथ एनजीओ के भी तकनीकी रुपांतरण पर ज़ोर देना चाहिए

”

"समन्वय सहज होता है, जब उद्देश्य समान हों

श्री सुदर्शन भगत
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री

स्वैच्छिक संगठन की भूमिका अद्भुत् है। अगर उद्देश्य एक हों तो समन्वय के मार्ग में कोई समस्या नहीं और यही समन्वय सही मायने में आयोजित हो रही इस कार्यशाला का मूल उद्देश्य भी है। देश का विकास तभी संभव है, जब गांव का विकास हो और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई आदर्श ग्राम योजना, इसी सोच का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में प्रबोधिनी की पहल प्रशंसनीय है। इस संस्था की भूमिका इस अर्थ में सचमुच अद्भुत् है कि प्रबोधिनी तकनीक को जन-जन तक पहुंचा रही है। स्वैच्छिक संगठनों का यह जुटान आने वाले दिनों का शुभ संकेत है ।

देश का विकास तभी संभव है, जब गांव का विकास हो"

परिवर्तन छोटे-छोटे कार्यों से होता है।हम कभी कभी मान लेते हैं कि परिवर्तन के लिए बहुत बड़ी-बड़ी योजनाएं, उन योजनाओं को लागू करने के लिए लंबा-चौड़ा तंत्र चाहिए, तो ऐसा नहीं है।हमारी एक छोटी सी साकारात्मक पहल एक बड़ा बदलाव ला सकती है । आवश्यकता केवल शुरुआत करने की होती है ।

एक बार जब हम अपनी पूरी संकल्प शक्ति के साथ किसी कार्य को शुरू कर देते हैं, तो कड़ी से कड़ी मिलती जाती है और परिवर्तन अपना आकार लेता जाता है । संकल्प की शुद्धता में इतनी शक्ति होती है कि किसी को बलात् जोड़ने की भी आवश्यकता नहीं होती।लोग स्वयं ही जुड़ते जाते हैं और देखते देखते दृश्य बदलने लगता है ।

“ आरंभ कीजिए, परिवर्तन स्वयमेव होगा

श्री अदृश्य काडसिद्धेश्वर स्वामी,

सिद्धगिरी मठ

निर्वहन कुशलता ही हमारी प्रेरणा

श्री मदनलाल मीणा,
महानिदेशक, कपार्ट

कपार्ट को ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा स्वच्छता मंत्रालय का भरपूर सहयोग प्राप्त होने की आशा है । प्रधानमंत्री की विशेष परियोजना; डिजिटल इंडिया तथा स्किल इंडिया कार्यक्रम ग्रामीण भारत के संपूर्ण बदलाव के एक शक्तिशाली उपकरण साबित हो सकते हैं और कपार्ट इस साकारात्मक बदलाव का माध्यम होना चाहता है । आने वाले दिनों में स्वैच्छिक संगठनों द्वारा ग्रामीण भारत के तकनीकी पक्ष को आगे ले जाने की ज़िम्मेदारी हमारी होगी और कोई शक नहीं कि विगत सालों में स्वैच्छिक संगठनों ने अपनी उत्तरदायी भूमिका का जिस तरह से निर्वाह किया है,वही निर्वहन कुशलता इन संगठनों की प्रेरणा का आधार बनेगी ।

विशुद्ध प्रेरणा ही स्वैच्छिक संगठनों का कर्ममंत्र

डॉ. विनय सहस्रबुद्धे,
महानिदेशक, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी

काम की विशुद्ध प्रेरणा ही सही मायने में स्वैच्छिक संगठनों का कर्ममंत्र है । इस कर्म की सामाजिक प्रतिबद्धता ही उनकी किसी भी तरह की आशंकित फ़िसलन को मज़बूती से रोकती है । इसके लिए इस कार्यशाला में विशेष रूप से पधारे स्वामी काडसिद्धेश्वर जी महाराज एक अनुपम और सुंदर उदाहरण हैं । स्वामी जी ने केवल अपनी इच्छाशक्ति से न सिर्फ़ ग्रामीण विकास का एक सुंदर मॉडल प्रस्तुत किया है, बल्कि उस मॉडल को कोल्हापुर के एक गांव में अनुपम रूप से यथार्थ की शक्ल दी है । स्वामी जी द्वारा किये जा रहे कार्य,वास्तव में एक दिशानिर्देश है और ये कार्य हमें इस बात की सीख देते हैं कि जो अंत:प्रेरणा से स्वेच्छा के आधार पर जनहित में काम करे, स्वैच्छिक संगठन वास्तव में वही है।

“

आने वाले दिन ग्रामीण विकास के हैं

श्री दीपांकर श्री ज्ञान,

निदेशक, गांधी स्मृति दर्शन समिति (जीएसडीएस)

दोनों ग्रामीण विकास मंत्री, ग्रामीण विकास की दशा और दिशा दोनों बदलने की क्षमता रखते हैं और इनके द्वारा की जा रही पहल से ऐसा साफ़ दिखता है कि आने वाले दिन ग्रामीण विकास के ही नाम होंगे । स्वैच्छिक संगठन इस बात को बार-बार साबित करते रहे हैं कि ग्रामीण विकास की हर पहल में ये संगठन एक अनिवार्य कारक हैं, जिनके साथ ही ग्रामीण विकास की कोई भी योजना आगे बढ़ती है, गति पाती है और अपना बेहतर और मूर्त आकार हासिल करती है।

”

"परस्पर जुड़ाव ही उद्देश्य पूर्ति की गारंटी

श्री रवीन्द्र साठे
कार्यकारी निदेशक, रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी

इस कार्यशाला में पधारे सभी सम्मानीय व्यक्तियों तथा संगठनों को धन्यवाद।सभी लोगों तथा संगठनों ने अपने-अपने अमूल्य अनुभव देकर एक दूसरे को समृद्ध किया है।माननीय मंत्री महोदय श्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी तथा सुदर्शन भगत जी की उपस्थिति तथा उनके संबोधन ने हमें तंत्र के अनुभव से संपृक्त तो किया ही है,भविष्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों के लिए इससे आश्वासन भी मिला है कि भविष्य में लोगों के लिए, लोगों द्वारा और भी बेहतर कार्य किये जा सकते हैं।

"

स्वैच्छिक संगठनों के लिए योजनाओं में असीम संभावनाएं

श्रीमती रश्मी शुक्ला शर्मा,
अतिरिक्त सचिव, पंचायती राज मंत्रालय

संविधान के भाग IX से स्पष्ट होता है कि बिना विकेन्द्रीकरण के ग्रामीण विकास की कल्पना नहीं की सकती है और इस कल्पना को वास्तविकता के धरातल पर तभी उतारा जा सकता है, जब एनजीओ की भरपूर भागीदारी हो। एनजीओ का मुख्य काम है; काम काज तथा उसकी पारदर्शिता की वक़ालत करना। एनजीओ का विकास एक साकारात्मक संकेत है, क्योंकि इससे सरकार का बोझ हल्का होता है तथा इससे लोकतंत्र की बुनियादी इकाई को अपनी ज़िम्मेदारी के निर्वहन में सहूलियत होती है और उन्हें लगता है कि उनकी गतिविधियों पर जनअपेक्षाओं तथा जनआवश्यकताओं की गहरी दृष्टि है। पंचायत का मामला राज्य के अंतर्गत आता है। ऐसे में पंचायतों के काम काज में केन्द्र का कोई लेना देना तो नहीं होता है, लेकिन जिन राज्यों ने अपने यहां पंचायतों को मज़बूत किया है, उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जा सकता है। केन्द्र, पंचायत को लेकर ऐसी ही भूमिका निभाता है। इस मंत्रालय के 2004 में अस्तित्व में आने के बाद बैकवर्ड रीज़न ग्रांट फ़ंड (बीआरजीएफ़) तथा राजीव गांधी पंचायत सशक्तिकरण अभियान जैसी कई बेहतरीन पहल की गई है। लेकिन बड़ा बदलाव 2015 से हुआ है, जब 14वें वित्त आयोग ने राजस्व का काफ़ी हिस्सा राज्य को दिये जाने की अनुसंशा की। अब बीआरजीएफ़ को केन्द्र की ओर से फ़ंड नहीं मिलता और फ़ंड सहित पूरी ज़िम्मेदारी राज्य सरकार के हवाले है।

14वें वित्त आयोग ने पहले के मुक़ाबले पंचायत को मिलने वाली राशि तिगुनी कर दी है। कुल राशि का 90 प्रतिशत सीधे-सीधे पचायत के पास जाता है और 10 प्रतिशत राशि परफ़र्मेंस ग्रांट के रूप में होती है, जो स्थिति के अनुसार एकाउंट में क्रेडिट कर दी जाती है। जैसे ही पंचायत को मिलने वाली राशि राज्य कोष में जमा होती है, उसके 15 दिनों के भीतर पंचायतों को आवंटित कर दी जाती है। यह काम राज्य वित्त आयोग करता है। 3 हज़ार की आबादी वाले पंचायत को प्रतिवर्ष 17 लाख रुपये आवंटित होते हैं। मंत्रालय इस बात पर दृष्टि रखता है कि पैसे सही जगह पर जा रहे हैं या नहीं। मंत्रालय प्रशिक्षण और तकनीकी जागरूकता का ख़्याल भी रखता है। पुरस्कृत पंचायतों का ई-गवर्नेंस के रूप में विकास किया जाता है।एनजीओ से अपेक्षा की जाती है कि वो पंचायतों का समर्थन करेंगे, लोगों को इस प्रक्रिया में किस तरह शामिल किया जाए, इसका

ख़्याल रखेंगे, स्वच्छता पर ज़ोर, व्यवहार परिवर्तन कराने का प्रयास तथा कचरा मैनेजमेंट को लेकर पहल करेंगें। स्वैच्छिक संगठन इन तमाम पक्षों को लेकर एक समग्र सोच के निर्माण तथा पंचायत में ई-सेवा देकर बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। पैसे अब न केन्द्र के पास और न ही राज्यों के पास होते है, बल्कि यह सीधे पंचायतों के पास पहुंच रहे हैं। ऐसे में एनजीओ को अपने कार्य संपादन के लिए निधि के सिलसिले में पंचायतों से ताल मेल बनाना चाहिए।

फ़ंड के विकेन्द्रीकरण से कार्य आसान हुए

श्रीमती संध्या सिंह,
निदेशक (राज्य), पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय

पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय 2012 में एक स्वतंत्र मंत्रालय बना। इस मंत्रालय का सबसे बड़ा कार्यक्रम एनआरडीडब्ल्यूपी है तथा यह केन्द्र और राज्य सरकार का एक संयुक्त कार्यक्रम है। राज्य का पीएचईडी ग्रामीण क्षेत्रों तक अपनी पहुंच रखता है और इसी के ज़रिये यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों तक धरातल पर उतरता है।

मंत्रालय इस बात पर विशेष दृष्टि रखता है कि ग्रामीण इलाक़ों को शुद्ध पानी मिले और अगर पीने के पानी में अशुद्धता है, तो उसे किस तरह पेयजल में परिवर्तित किया जाए। अंत:भूजल पर मंडराता ख़तरा एनजीओ प्रतिनिधियों को अच्छी तरह मालूम है तथा सतही जल को पीने के पानी में बदलने की संभावना की तलाश करनी होगी। इसके लिए केन्द्र और राज्य दोनों समान रूप से भागीदारी निभाते हैं। इस पर खर्च होने वाली राशि का 5 प्रतिशत सपोर्ट फ़ंड के रूप में इस्तेमाल होता है और इस सपोर्ट फ़ंड का 15 प्रतिशत राशि जल की गुणवत्ता तथा उसकी निगरानी के लिए ब्लॉक स्तर पर उपकरण ख़रीदने में ख़र्च किया जाता है।फ़ंड के लिए 21 मानक निर्धारित किये गए हैं। इनकी मानकता की जांच के लिए एक तीसरी पार्टी को राज्य भेजता है और इसी के आधार पर अनुपातगत राशि आवंटित होती है। सपोर्ट फ़ंड का एक हिस्सा दक्षता निर्माण पर ख़र्च किया जाता है और इस दक्षता निर्माण में एनजीओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इसके लिए एनजीओ की पात्रता है कि वह इस क्षेत्र विशेष को लेकर 4-5 राज्यों में सक्रिय हो। इसके लिए एनजीओ अपने आंकड़ों के साथ अपना प्रस्तुतीकरण देता है और इसी प्रस्तुतीकरण के आधार पर विभिन्न मदों के लिए राशि आवंटित होती है। स्वच्छ भारत मिशन को 2019 तक स्वच्छता का लक्ष्य पूरा कर लेना है। इसके अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालय के निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि 12,000 रुपये हैं।इसे पाने वालों

में बीपीएल के सभी लोग तथा एपीएल में आने वाले बुज़ुर्ग तथा बेसहारा लोग होते हैं। सामाजिक जल प्रबंधन एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए ग्राम पंचायत से आवेदन ज़िला तक जाता है, फिर ज़िला से राज्य के पास आवेदन भेजे जाते हैं, जबकि पंचायतों के लिए राज्य को केन्द्र से पैसे मिलते हैं।इसके अंतर्गत 15-20 कारक चिह्नित हैं। इनमें व्यवहार परिवर्तन एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके लिए ज़रूरी जागरूकता अभियान का एक महत्वपूर्ण घटक एनजीओ हो सकता है।

हर महीने होने वाले प्रकाशन में भी एनजीओ और ख़ासकर स्थानीय स्तर पर सक्रिय एनजीओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। कुल फ़ंड के 8 प्रतिशत की 3 प्रतिशत राशि का आवंटन मल्टिमीडिया पर होता है। स्वच्छता अभियान के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक कुशलता का अभाव है। तीसरी पार्टी द्वारा किये जाने वाले अंकेक्षण की भूमिका एनजीओ ही निभाते हैं। राज्य में बहुत सारे एनजीओ की आवश्यकता है, ज़िला स्तर, ब्लॉक स्तर तथा पंचायत स्तर पर भी एनजीओ की ज़रूरत है। इस तरह एनजीओ के लिए स्वच्छता अभियान में एक बड़ी संभावना है।

परियोजना प्रस्ताव लेखन मुश्किल नहीं होता

श्री सी.एस.पांडेय,
निदेशक, कपार्ट

एनजीओ द्वारा प्रस्तुत किसी भी परियोजना के स्वीकृत होने में प्रस्ताव लेखन की भूमिका महत्वपूर्ण

होती है जितना मुश्किल यह काम लगता है, दरअस्ल यह उतना मुश्किल नहीं है। कुछ बिन्दुओं का ख़्याल करके इस सुगमता को प्राप्त किया जा सकता है एनजीओ जहां कार्य करते हैं, उस क्षेत्र विशेष की जानकारी पहली ज़रूरी चीज़ है।इसके बाद उस स्थान और वहां से संबंधित समस्या का विश्लेषण ज़रूरी है और संबंधित घटकों का आंकड़ों के स्वरूप में होना चाहिए ताकि विश्लेषण करने में सुविधा हो। ऐसा सर्वेक्षण के माध्यम से ही संभव है। इसलिए सर्वेक्षण सबसे महत्वपूर्ण है। इसके बाद सर्वेक्षण के आधार पर किये गए विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि क्षेत्र विशेष में समस्या से मुक्ति पाने के लिए समाधान का वह प्रारूप क्या हो सकता है, जो उपलब्धता के हिसाब से सुलभ, संचालन के लिहाज़ से सरल और व्यय के दृष्टिकोण से वहनीय हो।परियोजना का निर्माण अंतराल तथा इंजीनियर की

सहायता से एक संभावित प्रारूप का निर्णय लेना भी आवश्यक है। जिसके लिए प्रस्ताव बनाना है, उसकी मार्गदर्शिका का अध्ययन भी करना चाहिए। 2006 में पहली मार्गदर्शिका प्रकाशित की गई। इससे एनजीओ की पात्रता की शर्तों का ज्ञान होता है। इसके लिए कुछ मोटी-मोटी शर्तें सामान्य होती हैं, और वह है: एनजीओ ने तीन साल का कार्यकाल पूरा कर लिया हो,संस्था के खाते तीन साल पुराने हों, एनजीओ ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रहे हों, एनजीओ ने अपना रिटर्न कम से कम तीन साल तक फ़ाइल की हो, एनजीओ ब्लैकलिस्टेड नहीं हो तथा स्टैंडिंग कमेटी में कोई रिश्तेदार नहीं हों, मैनेजिंग कमेटी हाल ही में गठित हो, वार्षिक रिपोर्ट तथा अंकेक्षित खाते हों तथा दोनों के बीच समरूपता हो, एनजीओ के पास अपना PAN नंबर हो, सदस्यों के फ़ोटो के साथ उन सभी के हस्ताक्षर हों, ताकि इसके बारे में सभी सदस्यों को ज्ञान हो सके, इसके बारे में पता चल सके। अगर ये समस्त पात्रता एनजीओ पूरी करते हों, तो कोई कारण नहीं कि प्रस्ताव सफल नहीं हो सके। उपर्युक्त तथ्यों के परीक्षण के साथ निम्निलिखित कॉलम का भरा जाना बहुत आवश्यक है

- संगठन का नाम
- पता गांव, पोस्ट ऑफ़िस, तालुका, पुलिस स्टेशन, ज़िला, राज्य, पिननंबर, टेलीफ़ोननंबर, पैन नंबर तथा ई-मेल
- कितने गांवों में यह संगठन संचालित है ?
- उद्देश्य
- सदस्यों,कार्यकारी / प्रशासनिक निकाय का विवरण
- अनुभव
- कपार्ट से कोई परियोजना
- मुख्य लक्ष्य समूह
- बैंक खाते की कुल संख्या, शाखा, खाता संख्या तथा खाते का प्रकार, खाता खोले जाने की तारीख़, हस्ताक्षरकर्ता के नाम तथा उनके बीच का संबंध
- किसी तरह का दोषारोपण ?

प्रस्ताव लेखन में भाषा को लेकर किसी तरह की हिचकिचाहट की आवश्यकता नहीं हैं, क्योंकि यह किसी भी रूप में रुकावट नहीं बनती है, चाहे वह अंग्रेज़ी हो, हिन्दी हो या फिर अन्य कोई क्षेत्रीय भाषा ही क्यों न हो।

बदलाव के वाहक ग्रामीण प्रौद्योगिकी का नवाचार

श्री मोहनलाल गुप्ता,
निदेशक, कपार्ट

ग्रामीण विकास में सहायक प्रौद्योगिकी का सिर्फ़ तकनीकी रूप से सफल होना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि उस प्राद्योगिकी में एक सामूहिक प्रयास तथा सामूहिक दृष्टिकोण का समावेश भी ज़रूरी है। प्रौद्योगिकी में संभावना होनी चाहिए तथा स्थिति के मुताबिक़ उसकी स्वीकार्य क्षमता भी होनी चाहिए,

क्योंकि कई बार रुढ़िवादी ग्रामीण समाज के सामने प्रौद्योगिकी का ऐसा हल दिया जाए, जो उसे स्वीकार ही नहीं है, तो उसका अर्थ फिर रह नहीं जाता है। परिणामस्वरूप प्रौद्योगिकी ऐसी होनी चाहिए, जो उन्हें स्वीकार्य हों तथा यह स्थानीय संसाधनों एवं स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देने के लिहाज़ से भी अनुकूल हों। महाराष्ट्र में आत्महत्या का मामला बहुत बड़ा था। खेतीबाड़ी के लिए घर में रखे गए पेस्टीसाइड की इसमें बड़ी भूमिका थी। किसानों के घर में आम घरेलू समस्याओं की तरह वहां भी पति-पत्नी के बीच मामूली बातों पर झगड़े होते रहते थे और इन झगड़ों की क्षणिक उत्तेजना में आसानी से उपलब्ध पेस्टीसाइड वो पी लेते थे। इससे उनके बीच आत्महत्या की दर बहुत ज़्यादा थी। समस्या का जब अध्ययन किया गया तो पाया गया कि सबसे पहले घर में रखे इन पेस्टीसाइड पर नियंत्रण पाना ज़रूरी है।इसके लिए हर गांव से 10-12 बच्चों को चुना गया, उन्हें पेस्टीसाइट को लेकर प्रशिक्षित किया गया, देखा गया कि धीरे-धीरे वहां आत्महत्या की दर कम हो गई। बाद में इन्हीं प्रशिक्षित बच्चों को रोज़गार दे दिया गया। प्रशिक्षण और अनुभव से गुज़रते हुए इन बच्चों ने बड़े होकर ग्रामीण विकास में अच्छी ख़ासी भूमिका निभायी। अगर स्थानीय समस्याओं को स्थानीय तरीक़े से हल किया जाए तो बेहतर परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

निर्माण के क्षेत्र में फ़ेरो सीमेंट का प्रयोग भारी बदलाव का कारण बना। रुड़की आईआईटी द्वारा अविष्कृत रैंडम रबर भी निर्माण के क्षेत्र में न सिर्फ़ बड़ा उपकरण साबित हुआ, बल्कि इसमें आसानी से प्रशिक्षित किये गए युवा आने वाले दिनों के लिए मूल्यवान् मानव संसाधन भी साबित हुए।इसी तरह की कहानियां तारा बरियम ब्रिक, फ़ायर रिटेंट थैच,कोकोनट लीफ़ थैच, पीवीसी कोटिंग-रैंडम रबर ब्लॉक की भी है। यह पता लगाना महत्वपूर्ण है कि कोई ग्रामीण प्रौद्योगिकी कहां और क्यों असफल हुई। कपार्ट की भूमिका प्रेरक होने की है,इस नाते वो समस्याओं को रिसर्चर के पास ले जाता है, ताकि समस्या का समाधान हर नज़रिये से तार्किक आधार पर संभव हो सके।

ऊर्जा के क्षेत्र में दीन बंधु बायो मास तथा इफ़िशियेंट क्रीमेशन की राह में कई बार रूढ़िगत सोच प्रौद्योगिकी के आड़े आती रही हैं और यही वह बाधा है, जिससे हमें पार पाना है। इसके दो तरीक़े हैं, या तो इस सोच के अनुसार ही परिणाम दिये जाएं, या फिर परिणाम के अनुसार उन्हें ढालने के लिए उनकी सोच में परिवर्तन लाया जाए।

ग्रामीण इलाक़ों में मोबाइल के आने से एक नई क्रांति हुई तो एक नई समस्या भी पैदा हुई और यह समस्या बिजली विहीन गांवों में मोबाइल चार्जिंग की समस्या थी। इसके लिए एक हैरतअंगेज तरीक़ा निकाला गया। सामान्य चूल्हे में एक इलेक्ट्रोड डाला गया और दूसरा इलेक्ट्रोड चूल्हे के बाहर रखा गया।इससे न सिर्फ़ मोबाइल चार्जिंग की समस्या से मुक्ति पा ली गई, बल्कि घर में एक बल्ब जलाने के लिए बिजली भी हासिल कर ली गई।

जल संरक्षण के लिए जलाशयों के पानी को वाष्पीकरण से बचाने के लिए उसके ऊपर प्लास्टिक का चंदोवा तान दिया जाता है और नीचे से पानी कहीं और न सरक जाए, इसके लिए उस जलाशय के बगल में एक छोटे मुहाने वाला गड्ढा खोदकर जलस्रोत को संरक्षित किया जाता है। इस सिलसिले

में अनुपम मिश्रा रचित दो किताबें, 'आज भी खरे हैं तालाब' तथा 'राजस्थान की रजित बूंदें' बेहद पठनीय हैं। ग्रामीण प्रौद्योगिकी की चर्चा इन किताबों में बड़ा ही सामान्य है। तारा लोम, बंबर बोर्ड्स, इंप्रूव्ड बुलॉक कार्ट्स, एचपीपी तथा आईआईटी दिल्ली द्वारा की गई हल्की साइकिल नई प्रौद्योगिकी के अद्भुत नमूने हैं। ग्रामीण प्रौद्योगिकी ने मछली पालन, हॉर्टिकल्चर, फॉरी कल्चर, पॉल्ट्री, सुअर पालन, मधुमक्खी पालन, सेरी कल्चर, मशरूम की खेती जैसे कई व्यवसायों का स्वरूप ही बदल दिया और ग्रामीण जीवन में अच्छा ख़ासा बदलाव ले आया। छोटी-छोटी ग्रामीण प्रौद्योगिकी ने बड़ी-बड़ी कामयाबियां हासिल की हैं। विशेष के कीप की प्रौद्योगिकी ने तेल और इसी तरह के द्रव पदार्थ के संरक्षण में बड़ी भूमिका निभायी है। दीनबंधु बायोमास प्लांट तथा ऑर्गेनिंग फॉर्मिंग की ग्रामीण प्रौद्योगिकी के चौंकाने वाले परिणाम दिये हैं। इस तरह की ग्रामीण प्रौद्योगिकी के विस्तार में समय लगता है और इसकी देर से और क्षेत्रों में विस्तार की धीमी प्रक्रिया को देखते हुए कभी भी हताश नहीं होना चाहिए। किसी-किसी ग्रामीण प्रौद्योगिकी को पहुंचने में तो सालों लग जाते हैं। मगर सूचना प्रौद्योगिकी के नये विस्तार ने इस समस्या को कुछ हद तक दूर भी कर दिया है। कपार्ट के यंग प्रोफ़ेशनल स्कीम ने न सिर्फ़ ग्रामीण विकास के क्षेत्र में अपना मानदंड स्थापित किया है,बल्कि इस स्कीम से निकले लोग आज देश और राज्यों में राजनीति के माध्यम से भी अपना अद्भुत योगदान दे रहे हैं। इस सिलसिले में डॉ.सुनीलम, भटनागर, रंगन और दत्ता साहब के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आज कपार्ट को इस बात को लेकर गर्व होता है कि ग्रामीण प्रौद्योगिकी में हुए नवाचार का सदुपयोग ग्रामीण विकास में व्यापक रूप से हो रहा है। इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत हो रहे आवास निर्माण में जिस प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल हो रहा है, वह कपार्ट से ही निकली हुई प्रौद्योगिकी है। कपार्ट द्वारा चलाये गए दो फ़ेलोशिप, क्रमश:पीएमआरडी फ़ेलोशिप और तारा-एमओआरडी फ़ेलोशिप इस समय भी अपने अस्तित्व में है। कपार्ट की नेटवर्किंग की सराहना जितनी की जाए, वह कम है। इसकी नेटवर्किंग ने न सिर्फ़ देशभर के कार्यकर्ताओं तथा संगठनों को एक संपर्क सूत्र में बांध दिया, बल्कि कई संगठन और व्यक्तित्वों को भी खड़ा करने में बड़ी भूमिका निभायी। इस संबंध में आईसीआरए, अन्ना हज़ारे, राजेन्द्र सिंह आदि के नाम गिनाये जा सकते हैं। इन ग्रामीण प्रौद्योगिकी की विशेषता है कि इन प्रौद्योगिकियों का लक्ष्य हमेशा लाभार्थी रहा है। सामाजिक प्रासंगिकता से परिपूर्ण इन प्रौद्योगिकी ने नेतृत्व विकास में भी अपना अहम योगदान दिया है। पर्यावरणोन्मुख इन प्रौद्योगिकी ने आय तथा रोज़गार सृजन की संभावना बनायी, उन्नत गुणवत्ता दी, मानव संसाधन को कुशल बनाने में योगदान दिया तथा समुचित प्रणाली

का विकास किया है। ग्रामीण प्रौद्योगिकी चाहे जहां भी आप देखें, उनकी चर्चा आप आपस में ज़रूर करें, क्योंकि इससे न सिर्फ़ अच्छी चीज़ों के विस्तार में सहायता मिलती है, बल्कि समग्र ग्रामीण समस्याओं के समाधान की एक महान संभावना भी बनती है।

ग्रामीण विकास विभाग में एनजीओ के लिए बड़ी भूमिका

श्री पी.के.सारंगी,
संयुक्त सचिव, ग्रामीण विकास विभाग

महात्मा गांधी नरेगा सबसे बड़ा फ़्लैगशिप कार्यक्रम है। यह एक ऐसा क़ानून है, जो मज़दूरों को अधिकार देता है कि वो बीडीओ से जाकर बोले कि वह उन्हें काम दें। उन्हें काम देने की ज़िम्मेदारी बीडीओ की है। महात्मा गांधी नरेगा एक साथ रोज़गार का अधिकार, आजीविका सृजन तथा परिसंपत्ति सृजन का माध्यम है। आईआरडीपी के अंतर्गत स्वर्ण जयंती स्वरोज़गार योजना, एनआरएलएम है तथा इनका लक्ष्य परिवार, बीपीएल, महिलाएं, अनुसूजित जाति, जनजाति का जीवन उन्नत करना है। इसके तहत् ही महिला किसान सशक्तिकरण योजना भी है, जिसके अंतर्गत अभी तक 28 लाख महिलाएं लाभान्वित हो चुकी हैं। ट्रेनिंग फ़ॉर यूथ का नाम अब दीनदयाल उपाध्याय हो गया है और यह भी एक फ़्लैगशिप ग्रामीण कौशल विकास कार्यक्रम है। इंदिरा आवास योजना तथा प्रधानमंत्री सड़क योजना जैसी योजनाओं में एनजीओ की भूमिका क्वालिटी कंट्रोल, प्रशिक्षण, निगरानी तथा प्रद्यौगिकी को लेकर बड़ी है। एमकेएसएपी तथा एनआरएलएम में परियोजनाओं को लेकर एनजीओ की भागीदारी महत्वपूर्ण है। नयी परियोजनाओं तथा उसके विपणन में भी एनजीओ की सहभागिता की अपार संभावना है।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल कार्यक्रम के अंतर्गत कौशल विकास के लिए 3,6,9 और 12 महीने का प्रशिक्षण दिया जाता है। परियोजना में एनजीओ की भूमिका इस कारण से महत्वपूर्ण है,क्योंकि उन्हें स्थानीय स्तर पर यह अच्छी तरह मालूम है कि किस इलाक़े में किस कौशल विशेष की आवश्यकता है।इसमें 75 प्रतिशत फ़ंडिंग केन्द्र करता है और 25 प्रतिशत राज्य की फ़ंडिंग होती है।उत्तर-पूर्व के राज्यों के लिए राशि आवंटन की स्थिति थोड़ी भिन्न है, क्योंकि वहां यह अनुपात 90 प्रतिशत और 10 प्रतिशत का हो जाता है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना में एनजीओ के लिए सिर्फ़ निगरानी वाली भूमिका है, मगर इंदिरा आवास योजना में लाभार्थी के चयन से लेकर माल मैटेरियल के समस्त स्तर पर एनजीओ की भागीदारी महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी नरेगा में ट्रेनिंग सपोर्ट, तकनीकी सपोर्ट, न्यू एक्शन रिसर्च, न्यू मॉडल आदि सभी स्तरों पर एनजीओ की भूमिका है।

कार्यों पर ध्यान रहे, तो फ़ंडिंग कोई समस्या नहीं

श्री विवेक अत्रे,
रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी

एनजीओ एक बहुत ही जीवंत क्षेत्र है। इसे लेकर क़ानून भले ही 1860 में बना हो, लेकिन इसके पूर्व से ही स्वैच्छिक कार्य अपने अस्तित्व में रहा है। एनजीओ का फ़ोकस समस्या समाधान और विकास दोनों पर होता है। भले ही मैक्रो लेवल पर सरकार काम करती हो, लेकिन उन कार्यों को माइक्रो स्तर पर ले जाने का कार्य ये एनजीओ ही करते हैं। किसी भी कार्यक्रम की बड़ी सफलता नागरिकों की चेतना में बदलाव लाना है, उसे जागरूक करते हुए उसके व्यवहार में परिवर्तन लाना है। इस ख़्याल से एनजीओ ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। लेकिन यह चिंतनीय है कि अभी तक किये गए अधिकतर कार्यों का डॉक्यूमेंटेशन नहीं हुआ है। आवश्यकता है कि हर काम का डॉक्यूमेंटेशन हो। अब मौखिक परंपरा को बदलकर लिखित परंपरा में क़दम रखने होंगे।ऐसा न हो कि पुराने को ही बार-बार नया मानकर उसका दोहराव किया जाए। एनजीओ के क्षेत्र में सिर्फ़ अवसर ही नहीं हैं, कई चुनौतियां भी हैं। अजीब बात है कि जिस ट्रेनिंग के लिए कार्पोरेट को लाया जाता है, उनके पास लोग नहीं हैं, इस भूमिका को धरातल पर एनजीओ के माध्यम से ही अंजाम दिया जाता है। ऐसे में दोनों की सहभागिता की बात तो समझ में आती है, मगर कहीं-कहीं सिर्फ़ कॉर्पोरेट के होने का कोई मतलब नहीं है ।

एनजीओ के सामने परियोजना हासिल करने की कई चुनौतियां होती हैं और इसके लिए कई कारक ज़िम्मेदार होते हैं। आज ज़्यादातर संस्थाओं के पास अपने कार्यों का बुनियादी डॉक्यूमेंटेशन नहीं है या यह डॉक्यूमेंटेशन पर्याप्त नहीं है। उन्हें कई बार क़ानून या संविधान के बारे में जानकारी नहीं होती है। उनके खाते की देखरेख उचित नहीं होती है। कई बार उन्हें अपने आपको प्रस्ताव के माध्यम से प्रस्तुत करने नहीं आता है। ये तमाम कारण मिलकर उनके सामने फ़ंडिंग की समस्या पैदा करते हैं।ऐसे में इनका संघर्ष बढ़ गया है। फ़ंडिंग ऑप्शन को ये आपस में साझा नहीं करते हैं। इन्हें कई बार योजनाओं के बारे में भी जानकारियां नहीं होती हैं।कई बार फ़ंडिंग की कमी इनके काम करने की राह में बाधा बनती है।

समाज में एनजीओ का योगदान बहुत बड़ा है।यही कारण है कि जिनके पास जज़्बा है, उन्हें फ़ंडिंग की परेशानी भी नहीं होती है। इस संबंध में नेम फ़ाउंडेशन का नाम लिया जा सकता है, जिसने अख़वारों में विज्ञापन दिये और अगले दिन उद्धृत

किये गए खाते में साढ़े सात करोड़ की सहायता राशि आ गई। यानी सही तरीक़े से काम करें तो पैसे कभी आड़े नहीं आते। सिर्फ़ सेवा के मंत्र से ही पैसे नहीं आने वाले, एनजीओ को अपना तंत्र भी ठीक रखना होगा। हमारा ध्यान अगर काम पर केन्द्रित हो, तो सरकारी फ़ंडिंग की भी कोई दिक़्क़त नहीं होगी, आवश्यकता है कि समाज के सामने हमारा काम दिखना चाहिए।

स्वच्छता राजनीतिक आज़ादी से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण

श्री वेदभ्यास कुंडू
जीएसडीएस

स्वस्थ जीवन के लिए ज़रूरी है स्वच्छता तथा स्वच्छता के लिए आवश्यक है कि जीवन में सरलता हो;सरलता यानी न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ जीवन यापन। गांधी जी का मानना था कि अगर जीवन में अनावश्यक सामान जमा होते जायेंगे,तो इससे गंदगी भी बढ़ती जायेगी। उनके मुताबिक़ स्वच्छता राजनीतिक आज़ादी से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। स्वच्छता महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वच्छता अगर बरती जाए तो कई रोगों से मुक्ति यों ही संभव है।गांधी जी की स्वच्छता का मतलब व्यक्तिगत सफ़ाई से नहीं था, बल्कि उनकी स्वच्छता एक समग्र स्वच्छता की अभिव्यक्ति थी, जिसमें तन, मन, समुदाय और पर्यावरण की स्वच्छता तक शामिल थी।

गांधी जी की राष्ट्रीय सामाजिक स्वच्छता की संकल्पना के अनुसार, सिर्फ़ व्यक्तिगत स्वच्छता गंदगी से मुक्ति की गारंटी नहीं हो सकती है। इसके

लिए राष्ट्रीय और सामाजिक स्वच्छता की भी आवश्यकता है। जब तक अनुशासन के साथ ज़िम्मेदारी का अहसास नहीं होगा, स्वच्छता का संपूर्ण लक्ष्य पाना संभव नहीं हो सकता। गांधी जी का मानना था कि स्वच्छता का व्यापक अभ्यास करना होगा।इस व्यापक अभ्यास के अंतर्गत कुएँ, तालाब, नदी, नालों, सार्वजनिक स्थलों आदि सबकी सफ़ाई को अपनी आदतों में ढालना होगा।तभी जाकर स्वच्छता का सपना साकार हो सकेगा।

स्वैच्छिक संगठनों के मेले में अनुभवों का मिलन

श्री रवि पोखरना,
रामभाऊ म्हाल्गी प्रबोधिनी

कार्यशाला सही मायने में विभिन्न अनुभवों के साथ

परस्पर भागीदारी का नाम है और इस अर्थ में यह कार्यशाला अद्भुत रही।देश के लगभग 100 स्वैच्छिक संगठनों और उन संगठनों से जुड़े 120 लोगों की उपस्थिति का दृश्य सामान्यता कल्पना होती है, लेकिन यह कल्पना यहां बहुत ही गहरे और रोचक रूप से साकार हुई। हर संगठन के अपने-अपने अनुभव हैं; स्वैच्छिक संगठनों से जुड़े कार्यकर्ताओं के लोगों से संपर्क, उनकी समस्याओं को समझने और समाधान तक पहुंचने के अनुभव भी अमूल्य हैं। इन्हीं अमूल्य अनुभवों को साझा करने के मंच के रूप में इस कार्यशाला का आयोजन हुआ और इस अर्थ में यह कार्यशाला पूरी तरह सफल हुई। देश के उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम सभी दिशाओं से आये लोगों और संगठनों के अनुभव तथा सरकारी एवं प्रशासनिक तंत्र को जानने-समझने वालों के अनुभवों की यह कार्यशाला एक संयुक्त मंच बनी। यहां से समझ की बयार जब देश के अलग-अलग हिस्से में प्रवाहित होगी, तब ग्रामीण विकास की एक नई और ताज़ी कथा लिखी जा सकेगी।क्योंकि यही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना भी है कि नया भारत, विकसित ग्रामीण भारत की कोख से निकले तथा आधारभूत संरचनाओं के साथ संपूर्ण रोज़गार की उम्मीद एक नये स्वरूप में खिले, जहां सबका साथ हो और सबका विकास हो।इस मायने में यह कार्यशाला भविष्य की एक बेहतर रूप-रेखा बुनती है।

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए एनजीओ का सहयोग आवश्यक

श्री बसंत जी

पहलवान की मां उसे कभी पहलवानी नहीं सिखा सकती। इसलिए जहां तक संभव हो, जनसहभागिता और ख़ासकर ग्रामीण क्षेत्रों की जनसहभागिता के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर एनजीओ का ही सहयोग लिया जाना चाहिए।कपार्ट के अस्तित्व के भविष्य को लेकर गठित की गई समिति में इरमा और टिस की रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। अगर कपार्ट पर सवाल उठाये गए हैं, तो इससे जुड़े तमाम स्तर के लोग अपने उत्तरदायित्व से कैसे बच सकते हैं, क्योंकि कोई संस्था बदनाम ज़रूर होती है, लेकिन उसके पीछे तो उससे जुड़े लोगों का ही हाथ होता है। धरातल स्तर पर किसी भी कॉर्पोरेट की पकड़ नहीं है।वहां वो एनजीओ की सहायता लेते हैं और उनका शोषण करते हैं। कार्पोरेट की भूमिका इस संबंध में सिर्फ़ टेक्निकल सपोर्ट और रोज़गार को लेकर ही हो, बाक़ी भूमिकाएं एनजीओ के हवाले होनी चाहिए, क्योंकि धरातल की सचाई और उस सचाई के हर पहलू से संबद्धता सिर्फ़ एनजीओ और एनजीओ से जुड़े लोगों की होती है।

RAMBHAU MHALGI PRABODHIN
in association with
GANDHI SMRITI DARSHAN SAMIT
organizes
NATIONAL WORKSHOP on PARTIC

ग्रामीण विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भागीदारी

राष्ट्रीय कार्यशाला । राजघाट, 16 -17 नवम्बर, 2015

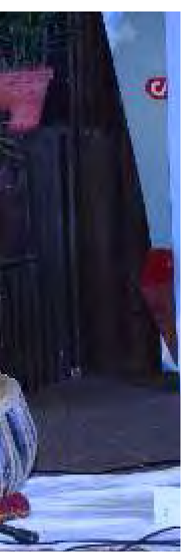

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
1	**रुरल डेवलमेंट सर्विस सोसाइटी** विनोवा नगर, कृष्णापुरम्पोस्ट, नागलापुरम् मंडल, चित्तूर आंध्र प्रदेश	**श्री वी.राममूर्ति रेड्डी** सचिव	**09440799434** rajunet22@gmail.com	प्रखंड: नगाड़ी, विजया पुरम्, नागलुपुरम् राज्य: आंध्र प्रदेश	• अनौपचारिक शिक्षा • स्वास्थ्य एवं जल स्वच्छता • युवा एवं महिला मंडल निर्माण • स्वरोज़गार कार्यक्रम
2	**मि.एम.श्रीनिवास रेड्डी मेनकाना सोशल सर्विस** फ़्लैट नंबर-103, एस.वी.रेसिडेंसी, न्यू राघवेन्द्रा नगर, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश	**एम.श्रीनिवास** आरईडीएम	**09246573455, 09505061118** sathinetworkts@gmail.com	न्यू राघवेन्द्रा नगर, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश	स्वच्छता एवं जल, जैविक खेती, महिला सशक्तिकरण, युवा सशक्तिकरण, ग्रामीण आवास निर्माण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पर्यावरण, कृषि
3	**दिशा ग्रामीण विकास मंच** पीओ-बज्जनी, भागलपुर, 812001 बिहार	**श्री विकास कुमार झा** संयोजक	**0641-2424048, 0641-2420498, 09939888070** dishagvm@yahoo.co.in	प्रखंड : भागलपुर ज़िले के16 प्रखंड तथा बाँका ज़िले के 10 प्रखंड ज़िला : भागलपुर तथा बांका राज्य : बिहार	सुप्रसिद्ध लोक कला,'मंजुषा कला'का पुनर्जीवन एवं विकास. ज़रूरतमंद बच्चों के लिए 24 घंटे आपातकालीन हेल्पलाइन का संचालन. विगत 7 सालों से राज्य स्तरीय नाबार्ड ग्रामीण उद्यमी मेला का आयोजन. फ़र्म तथा नॉन फ़र्म क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण देना.
4	**सत्य श्री साई सोशल वेलफ़ेयर ट्रस्ट** दानापुर, बेली रोड, पटना 801503, बिहार	**श्री शैलेन्द्र सिंह** उप-प्रमुख	**0612-2935444 07488425221** shailendrarm@gmail.com	ज़िले पूर्णिया अररिया किशनगंज कटिहार सहरसा सुपौल भागलपुर पटना भोजपुर गया	जागरूकता तथा क्षमता निर्माण दक्षता विकास एवं प्रशिक्षण आजीविका प्रोत्साहन ग्रामीण विकास पर्यावरण एवं स्वच्छता
5	**ग्राम विकास मंच** गांव-प्रसियान ख़ुर्द, पीओ-सेमरी, दावेश, रोहतास-802211 बिहार	**श्री सुदामा सिंह** सचिव	**8544203174, 9934834874** gramvikasmanch@sify.com sudama2008@rediffmail.com	प्रखंड : दवाथ, विक्रमगंज, दिनारा, सूर्यपुरा, नवा नगर, पीरो ज़िले : रोहतास, बक्सर, भोजपुर	कृषि विकास स्वच्छता एवं पर्यावरण कार्यक्रम धुँआ विहीन चूल्हे सौर ऊर्जा को प्रोत्साहन ग्राम सभा सशक्तिकरण
6	**क्रिएट,** मदर लॉग, आईटीआई मोड़, मिरचास बाड़ी, कटिहार-854105, बिहार	**श्री मनीष घोष** कार्यकारी निदेशक	**06452-230105 09304937700 07654185488** createkatihar@yahoo.com, bittughoshkatihar@gmail.com	प्रखंड : 30 ज़िले :कटिहार,पूर्णिया राज्य :बिहार	दक्षता निर्माण मंत्रालय एवं उद्योग मंत्रालय के एलएसएसएसडीसी के पीएमकेवीवाई के अंतर्गत मेडिकल सेल्स रिप्रज़ेंटेटिव प्रशिक्षण कार्यक्रमम, कटिहार ज़िले के स्थापित ग्रामीण स्वास्थ्य उपलब्धकर्ता के लिए ज़िला स्वास्थ्य सोसाइटी कटिहार के साथ प्रशिक्षण निगरानी सलाह तथा संयोजन
7	**महिला बाल युवा केन्द्र** गांव-कोरहर, पोस्ट-आनंदपुर कैंप, पटना- 801103, बिहार	**श्री बीरेन्द्र पी.सिंह** सचिव	**9334728218** birendrapsingh56@gmail.com	प्रखंड :बिहटा, मनेर, नौबतपुर, बरहाड़ा, आरा ज़िले : पटना, भोजपुर राज्य : बिहार	1. पेयजल एवं स्वच्छता 2. ग्रामीण विकास 3. महिला एवं युवा विकास 4. स्वास्थ्य एवं शिक्षा 5. ज्वलंत समस्याओं के प्रति जागरूकता
8	**ग्राम दीदी स्वयम् सेवी संस्थान्** भागलपुर-812005 बिहार	**श्रीमती उषा वर्मा** सचिव	**9234895922** gramdidi@gmail.com	प्रखंड :जगदीशपुर, नाथनगर, सबौर ज़िला : भागलपुर तथा बांका राज्य : बिहार	1. एसएचजी निर्माण (200 एसएचजी) 2. क्रेडिट लिंकेज 3. स्वच्छता नैपकीन प्रशिक्षण 4. एचपीजीएल स्वास्थ्य शिविर
9	**प्रतिभा महिला एवम् बाल विकास समिति,** प्रिय सदन, शीतला मंदिर के बगल में, राष्ट्रीय उच्चपथ के निकट, गांव एवं पोस्ट-सोमनी, राजनद गांव, छत्तीसगढ़-491441	**श्री एकलव्य तिवारी** अध्यक्ष	**9827159807 9039510540** pmebvs@gmail.com eklavya.tiwariji@gmail.com	प्रखंड : 21ज़िले : 5 (राजनदगांव,कवर्धा,बालोड़,दुर्ग,रायपुर)राज्य : छत्तीसगढ़	1. ग्रामीण एवं शहरी स्वच्छता 2. एसएचजी निर्माण एवं महिला सशक्तिकरण, व्यावसायिक प्रशिक्षण3. ग्रामीण विकास कार्यक्रम 4. एचआईवी /एड्स तथा टीबी के प्रति जागरूकता कार्यक्रम

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
10	**आशीर्वाद इंडिया ट्रस्ट** 1/11417, सुभाष पार्क एक्सटेंशन, नवीन शहादरा, दिल्ली	**श्री अमित शर्मा** प्रमुख समन्वयक **अक्षिता बहुगुणा**	**9810144053** **9311143313** amitsharma71@yahoo.com	प्रखंड सियालदह बिनोली ज़िले अलमोरा बागपत शहदरा राज्य उत्तराखंड उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली	1. आधारभूत चिकित्सा केन्द्र 2. स्वास्थ्य संबंधी 3. शिक्षा एवं नैतिक विकास
11	**फ़ियान ट्रस्ट** 5/26A, जंगपुरा-B दिल्ली	**श्रीमती सुमन** निदेशक **श्री मोहित कुमार** क्षेत्र समन्वयक	**011-24371223,** **9810861107** fiantrust@gmail.com	प्रखंड : शहर तथा वाह्य आच्छादित क्षेत्र ज़िले : लातेहार, रांची, गढ़वा, गुमला, संजय कॉलोनी, सरायकेला ख़ान, दरियागंज, फ़िरोज़ाबाद, आगरा तथा वाराणसी राज्य : झारखंड, दिल्ली, यूपी एवं बिहार	1. ग्रामीण समुदायों एवं प्रवासी समुदायों, विशेषकर महिलाओं का सामाजिक - आर्थिक सशक्तिकरण 2. खाद्य अधिकार पहल 3. आजीविका सृजन एवं शिक्षा का अधिकार 4. स्व हेल्प लाइन समूह1के माध्यम से महिला सशक्तिकरण
12	**सेवा इंटरनेशनल** 49, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002	**श्री अभिषेक कुमार** समवन्वयक **श्री निशांद अग्रवाल** कार्यक्रम प्रबंधक	**011-43007650** **7544007430** abhishekkumar.jgd@gmail.com **9910550176** nishant.aggarwal@gmail.com	प्रखंड : कर्णप्रयाग, सिमली, उखीमठ, गुप्तकाशी ज़िले : रुद्रप्रयाग एवं चमोली	1. स्वयं सहायता समूह का निर्माण 2. दाल की जैविक खेती 3. हॉर्टीकल्चर एवं मसाले
13	**अखिल भारतीय ग्रामीण उत्थान समिति,** T-3 मल्हान प्लाज़ा,प्लॉट संख्याt-5, पॉकेट-7, सेक्टर-12 द्वारका नई दिल्ली (मेट्रो पिलर संख्या 1034)	**श्री राजेश वर्मा** सचिव	**011 45012155** **01493-517517** **9212505900** **9413304007** abgusho@gmail.com	प्रखंड द्वारका तिजारा कोटकासिम भावनी मण्डी जाडोल) ज़िले दक्षिण-पश्चिम दिल्ली अलवर झालावार उदयपुर) राज्य-दिल्ली एवं राजस्थान)	1. प्रजननात्मक स्वास्थ्य एवं अधिकार 2. प्रारंभिक शिशु देखभाल और विकास 3. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 4. कुशल एवं संलग्न युवा 5. आजीविका 6. महिला सशक्तिकरण 7. सामुदायिक संगठन एवं विकास
14	**ऑल जे एण्ड के सर्विसमैन वेलफ़ेयर सोसाइटी,** जम्मू 199, रेहरी कॉलोनी, जम्मू एवं कश्मीर	**श्री कुलदीप शर्मा** प्रमुख	**0191-2585760** **9419126717** kuldeep exams@yahoo.co.in	प्रखंड : जम्मू, अखनूर ज़िले : जम्मू, अखनूर, कठुआ राज्य : जे एण्ड के	1. कुशलता उन्नयन 2. युद्ध विधवा एवं पूर्व सेवादार बच्चों के लिए शिक्षा 3. आजीविका सृजन एवं शिक्षा का अधिकार 4. पर्यावरण
15	**ज़ुबैदा नेशनल इंस्टिट्युट** एच. ओ. खनवारी मत्तान जम्मू एवं कश्मीर ज़िला-अनंतनाग	**श्री गुलज़ार अहमद वानी** अध्यक्ष	**01932-228187** **9419097670** **9796573408** zubidango@rediffmail.com	प्रखंड : खोवेरीपोरा, दोचानीपोरा, अचाबल ज़िला :अनंतनाग राज्य : जम्मू एवं कश्मीर	1. ग्रामीण विकास एवं स्वच्छता 2. महिला सशक्तिकरण 3. शिशु विकास 4. सामाजिक-आर्थिक जागरूकता
16	**त्रिरत्न प्रेरणा मंडल** त्रिरत्न भवन, टीपीएस छठा, म्युनसिपल गार्डन के निकट, शांताक्रुज(पश्चिम), मुंबई, महाराष्ट्र	**सुश्री सीमा संतोष रेडकर** कार्यकारी सदस्य	**(022) 26123195,** **22886264,** **9820165156** **9322844054** triratnaorg@gmail.com redkarema@gmail.com	प्रखंड शांताक्रुज ज़िले मुंबई एवं मुंबई के आस-पास राज्य महाराष्ट्र	1. जल एवं सार्वजनिक स्वच्छता 2. ठोस कचरा प्रबंधन 3. शिक्षा 4. सामुदायिक गतिशीलता
17	**ग्राम दीदी स्वयम् सेवी संस्थान्** भागलपुर-812005 बिहार	**श्रीमती उषा वर्मा** सचिव	**9234895922** gramdidi@gmail.com	प्रखंड :जगदीशपुर, नाथनगर, सबौर ज़िला : भागलपुर तथा बांका राज्य : बिहार	1. एसएचजी निर्माण (200 एसएचजी) 2. क्रेडिट लिंकेज 3. स्वच्छता नैपकीन प्रशिक्षण 4. एचपीजीएल स्वास्थ्य शिविर
18	**ग्रामियम** संख्या :9,गोकुलम बिल्डिंग पेरियार स्ट्रीट,कारवेरी नगर, पोस्ट-कुलिथलाई,ज़िला-करूर	**श्री पी.नारायण** निदेशक	**04323-225128** **094439 16372** gramnara@yahoo.co.in	प्रखंड 16 ज़िले डिंडीगुल करूर एवं त्रिची राज्य तमिलनाडू	1. बच्चों के लिए शिक्षा कार्यक्रम 2. जल एवं स्वच्छता को लेकर पीआरई सदस्यों तथा धरातल स्तर के कार्यकर्ताओं के बीच क्षमता निर्माण कार्यक्रम 3. दक्षता विकास कार्यक्रम 4. माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रम 5. एचआईवी /एड्स कार्यक्रम 6. स्वच्छता कार्यक्रम

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
19	**विध्या** प्लॉट संख्या- 32 गांधी नगर, पहली गली,अलवर्थिरुनगर, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री टी.के.सत्गोपन**	**044-23642551** **9444182732** **9940254908** vidhyaa32@gmail.com tk.satagopan@yahoo.co.in	ज़िले :चेन्नई, थिरुवल्लूर, कांचीपुरम्, विलुपुरम्, कुड्डलोर, नागपट्टनम् राज्य : तमिलनाडू	1. विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित एवं तमिनाडु सरकार द्वारा कार्यान्वित उप-सलाहकार निगरानी एवं मूल्यांकन पुथुवझु परियोजना 2. टीडब्ल्यू, तमिलानडू के अंतर्गत आईईसी गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए सूचीबद्ध स्वैच्छिक संगठन 3. राष्ट्रीय वित्तीय समावेशी सर्वेक्षण 4. नागेरक्वाइल में ग्रामीण विकास विभाग द्वारा कार्यान्वित तथा स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत यूनीसेफ़ द्वारा वित्त पोषित ओडीई सर्वेक्षण
20	**पीपल एक्शन फ़ॉर नेशनल इंटिग्रेशन (पीएएनआई)** साई सदन, 530, सिविल लाइन्स (जेबी पॉलिटेक्निक), ज़िला-फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश	**श्री शशी भूषण** प्‌्रमुख-कार्यक्रम	**05278 225175** **9415140215** panisansthan@rediffmail.com	प्रखंड : 42ज़िले : 17 राज्य : उत्तर प्रदेश	1. स्वास्थ्य एवं पोषण 2. एकीकृत शिशु विकास 3. आजीविका 4. लिंग एवं प्रशासन 5. एनआरएम तथा जलवायु परिवर्तन
21	**लोकप्रिय जनहित सेवा संस्थान** (एलजेएसएश) घुइसर, नाथ रोड, लालगंज, उत्तर प्रदेश प्रतापगढ़	**श्री निरंजन प्रकाश सचिव**	**9721207006** **9451275040** lokpriyapbh@gmail.com	प्रखंड :लालगंज ज़िला : प्रतापगढ़ राज्य : उत्तर प्रदेश	1. सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पोषण 2. आजीविका का विकास 3. शोध एवं संपर्क संजाल 4. स्वच्छता एवं स्वस्वथकर 5. सुरक्षित जल
22	**ग्रामीण पुनर्निर्माण संस्थान्गांव-** बिलारी, पोस्ट- बर्हया, उत्तर प्रदेश	**श्री राजदेव चतुर्वेदी सचिव**	**9451113651** gps.azm@gmail.com	प्रखंड 5ज़िले आज़मगढ़ अम्बेडकरनगर तथा जौनपुर राज्य उत्तर प्रदेश	
23	**प्राच्यविद्या शोध सदन** केन्द्रपोस्ट-चमराहा, निगोह जॉनपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी** प्रमुख	**9455010552** rkt1949@gmail.com	प्रखंड : बारसथी एवं अन्य प्रखंड ज़िले : जौनपुर,एलाहाबाद आदि राज्य : उत्तर प्रदेश	1. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को लेकर जानकारी का विस्तार 2. वृक्षारोपण को प्रोत्साहन 3. स्वास्थ्य पर्यावरण पर प्रदर्शनी कराना
24	**भागवान् मानव कल्याण समिति** ग्राम तथा पोस्ट- अरियासो, तहसीन-घोषी, ज़िला-मऊ, उत्तर प्रदेश	**श्री रमेश चंद्र सिंह**	**05461-223922** **9452050368** bmksmau@gmail.com bmks@rediffmail.com	प्रखंड : घोसीज़िला-मऊ राज्य :यू.पी.	1. महिला सशक्तिकरण 2. सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम 3. पर्यावरण संबंधी तामपमान 4. वयस्क शिक्षा 5. ग्रामीण विकास 6. जल स्वच्छता 7. कुपोषण 8. आजीविका 9. पंचायती राज 10. कृषक जागरूकता शिविर
25	**महिला ग्रामोद्योग सेवा समिति (एमजीएसएस)** ज़मीन बरामदपुर, मुहम्मदाबाद, गोहाना, ज़िला-मऊ उत्तर प्रदेश	**श्री संजय कुमार मिश्रा** समन्वयक	**0547-2320385** **9415836938** mgss_radhika@yahoo.co.in	राज्य उत्तर प्रदेश ज़िला-मऊ राज्य उत्तर प्रदेश	1. सीबीओ निर्माण (6093 महिलाएं समूहित हैं), 80 स्वयं सहायता समूह की ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण 2. सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (सीएचपी) 3. एमनरेगा,पीडीएस तथा ग्राम सभा 4. पंचायती राज प्रतिनिधि प्रशिक्षण
26	**अल्पसंख्यक पिछड़ा वर्ग मार्ग कल्याण समिति** 675, दरियाबाद, उत्तर प्रदेश	**श्री सिकंदर ख़ान** सचिव	**9984242640** **9453441742** Sikandarkha2014@gmail.com	प्रखंड चका ज़िला-एलाहाबाद राज्य उत्तर प्रदेश	1. शिक्षा 2. कुशलता विकास 3. जल एवं स्वच्छता 4. पूर्व सहायता समूह
27	**आदर्श ग्रामोद्योग विकास संस्थान्ग्राम एवं पोस्ट** -देवचंदपुर, उत्तर प्रदेश	**श्री अरुण कुमार पाण्डेय**	**9450722192** adrashgram@rediffmail.com	प्रखंड सैदपुर चिरायगांव ज़िला ग़ाज़ीपुर वाराणसी राज्य उत्तर प्रदेश	1. जागरूकता कार्यक्रम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता 2. समूह निर्माण शिक्षा कुशलता विकास के माध्यम से महिला सशक्तिकरण 3. प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्यावरण कार्यक्रम 4. कपार्ट कार्यक्रम के अंतर्गत आवास निर्माण एवं स्वच्छता

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
28	**जन कल्याण एवम् ग्रामीण उत्थान संस्थान,** गोपला, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश	**श्री उमाशंकर शर्मा** सचिव	**05465-222059** **9450821519** jkgus.um@gmail.com	प्रखंड: थबरपुर, रानीकिसारय, हरैया, आज़मगढ़ ज़िले: आज़मगढ़, मऊ राज्य: यूपी	1. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण 2. ए.एच.बी.वाई.योजना श्याम मृद्गांड 3. सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम 4. स्फूर्ति कार्यक्रम 5. कुशल विकास प्रशिक्षण
29	**स्वाबलंबन संस्थान,** आगरा, उत्तर प्रदेश		**81710 11113** rssnps@gmail.com		
30	**ग्रामीण विकास प्रयास समितिचक्र** (वाया हलधरपुर), मऊ, उत्तर प्रदेश	**श्री राम प्रवेश भाई,** कार्यक्रम प्रबंधक	**9506063705** **7839981664** gvpsmau@gamil.com	प्रखंड : कोपागंज /रतनपुरा / घोसी ज़िला : मऊ राज्य : उत्तर प्रदेश	1. पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम 2. स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम 3. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम 4. लिंग कार्यक्रम (साकारात्मक पितृत्व प्रारुप)
31	**ग्रामोदय रचनात्मक विकास संस्थानग्राम-**चरियाव ख़ास, उत्तर प्रदेश देवरिया	**श्री सी.पी.कुशवाहा सचिव**	**9839673291** **9415075352** grvs_1@rediffmail.com sriniwaskushwaha@gmail.com	प्रखंड : 12 ज़िले : 05 राज्य: उत्तर प्रदेश	1. 1000 शौचालयों का निर्माण 2. 100 न्यून लागत आवास का निर्माण 3. 500 सोकपिट का निर्माण 4. 5000 ट्रिडल पंप का लगाना
32	**श्री आदित्य पटनायकरंगामाटिया,** पोस्ट- गोविन्दपुर, मयूरभंज, ओड़िशा अत्योदय चेतना मंडल		**9437060864** acmm@rediffmail.com adityapatnaik@hotmail.com		
33	**विकास भारती बिशुनपुरसेरका,** बिशुनपुर, गुमला - झारखंड	**श्री पंकज कुमार सिंह** प्रांत समन्वयक	**9431118333** **9386820512** vikasbharti1983@hotmail.com	प्रखंड : सभी ज़िले : रांची, गुमला, लातेहार, लोहरदगा राज्य :झारखण्ड	1. एनएमएमयू के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा 2. आजीविका प्रोत्साहन एवं कुशलता विकास 3. केवीके के माध्यम से कृषि हस्तक्षेप 4. जल एवं स्वच्छता
34	**यूथ फ़ॉर सस्टनेबल डेवलपमेंटबी -** 2 ,एम.सी.कार पार्किंग, हिमाचल प्रदेश	**श्री बिहारी शर्मा** कार्यकारी निदेशक	**177- 2811155** **9418014280** Bihariysd@gmail.com	राज्य :हिमाचल प्रदेश	1. युवक मंडल एवं एनजीओ का क्षमता निर्माण 2. पर्यावरणोन्मुख प्रौद्योगिकी का उन्नयन,अंगीकरण एवं समान वितरण 3. शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम व्यक्तियों/बच्चों की सुरक्षा तथा प्रोत्साहन 4. हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए कार्यशालाओं,सेमिनारों एवं प्रदर्शनियों का आयोजन
35	**सेवा संस्थान आंध्र प्रदेश** निम्बागल, उर्राकोण्डा	**के.वेंकटप्पा,** अध्यक्ष	**9502342331** kokavarisewasas@gmail.com	अनंतपुर(डी) , करनूर (डी), उपवाकोण्डव, मोनदाहस(10)	1. स्वच्छता कार्यक्रम रूफ़ 2. जल प्रबंधन 3. कुशलता विकास 4. हस्त विकास
36	**सर्बिक ग्राम विकास केन्द्रपोस्ट-** दासपुर, ज़िला-मिदनापुरपश्चिम बंगाल	**श्री गौरव भट्टाचार्य** प्रशासक	**3225254237** **9002230040** gourabbhattacharya_86@yahoo.co.in	प्रखंड : दासपुर । & II,घातल , चंद्रकोना ज़ला : पश्चिम मेदिनीपुर राज्य : पश्चिम बंगाल	1. जल परीक्षण 2. कपड़े सिलने एवं मोबाइल बनाने का प्रशिक्षण 3. नेत्र देखरेख एवं चिकित्सा
37	**उत्तरांचल उत्थान परिषद्** सेवा निकेतन, हरिद्वार मार्ग, पोस्ट-नेहरू ग्राम, देहरादून, उत्तराखंड	**श्री राम प्रकाश** पइनुली महा मंत्री	**09410150833** **09410196581** rpainuli2@gmail.com		1. ग्रामीण विकास 2. शिक्षा 3. प्रव्रजन 4. पर्यावरण

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
38	**ग्रामीण विकास संस्थानग्राम एवम्** पोस्ट, हथिनी, उत्तर प्रदेश	**श्री शमीम अब्बासी,** महासचिव **श्री मनोज कुमार तिवारी**	**0547-2287058** **0548-2220034** **09415281073** **09648292599** gvs.cso@gmail.com	प्रखंड : सदर एवं क़ासिमाबाद,ज़िला.-ग़ाज़िपुर मऊ ज़िले के सभी 9 प्रखंड तथा देवरिया के सभी 16 प्रखंड राज्य : उत्तर प्रदेश	1. टाटा ट्रस्ट द्वारा समर्थित सामुदायिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य कला एवं स्वच्छता 2. प्लान इंडिया,नाको एवं यूपीएसएसीएस द्वारा समर्थित एचआईवी-एड्स-पीपीटीसीटी कार्यक्रम एवं समरूप श्रमिक योजना 3. महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम 4. आजीविका कार्यक्रम 5. अपने आगामी कार्यक्रम को जोड़ें
39	**सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशनबी** एम.सी.कार पार्किंग, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के निकट, छत्तीसगढ़ विश्रामपुर, पोस्ट-विश्रामपुर	**श्री विजयराज अग्रवाल** अध्यक्ष **श्री पी.डी. द्विवेदी**	**07775-264003** **9926191919** vijayrajbspr@gmail.com gyanondayasurguja@gmail.com	प्रखंड : सूरजपुर ज़िले : सूरजपुर / सरगुजा राज्य : छत्तीसगढ़	1 असक्षमता कल्याण 2 पेयजल एवं स्वच्छता 3 हस्तशिल्प एवं स्वयं सहायता समूह 4 महिला एवं बाल कल्याण
40	**श्री विष्णु कुमार तिवारीवार्ड** टैगोर नगर, उत्तर प्रदेशसर्वोदय शिक्षा संस्थानरॉबर्ट्सगंज	**श्री विनय तिवारी**	**9621923932** sss.sonebhadra@gmail.com		1. स्वास्थ्य स्वच्छता
41	**वीमेन'स फ्रंट (महिला समख्या)** 1174/16, महावीर विहारओड़िशा पोस्ट-खंडागिर, भुवनेश्वर	**श्रीमती गीतांजलि पटनायक** सचिव	**0674-2386216** **9437349871** geetanjali.pattnaik3@gmail.com	प्रखंड निमपदावारांगा ज़िले खुर्द कटक राज्य ओड़िशा	1. शांतिपूर्ण विकास के माध्यम से महिला सशक्तिकरण 2. आय सृजन,कृषि,कचरों तथा स्वच्छता के माध्यम से ग्रामीण विकास 3. टिकाऊ विकास
42	**भविष्य भारतदूसरा तल,** ब्लॉक-बी, रॉक्साना टावर्स, आंध्र प्रदेश, ग्रीनलैण्ड, बेगमपेट हैदराबाद	**श्री श्रीकांत गुंडोजू** प्रबंधक	**040- 66570984** **9246281232** ho@bhavishyabharat.in	ज़िला : श्रीकाकुलम (आंध्र प्रदेश) ऊपरी सुवर्णगिरी (अरुणाचल प्रदेश, चंपा (छत्तीसगढ़) उत्तर सिक्किम (सिक्किम) राज्य : आंध्र प्रदेश ,अरुणाचल प्रदेश,छत्तीसगढ़ एवं सिक्किम	1 व्यापक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना हस्तक्षेप की रूपरेखा तथा लक्षित कार्यान्वयन 2 सामुदायिक स्वास्थ्य 3 शिक्षा 4 जल ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा 5 टिकाऊ आजीविका 6 आपदा हानि न्यूनीकरण
43	**अभिव्यक्ति फ़ाउंडेशनकमरा संख्या** 403-404, नई दिल्ली- 110011 ड्रीमलैण्ड, 1/18 बी, आसफ़ अली रोड	**श्रीमती शैलेन्द्र कुमार सिंह** महासचिव	**011 23232102** **9868035848** abhivyaktifoundation_2000@yahoo.com ShailendraKumars126@gmail.com	प्रखंड :सभी प्रखंड ज़िले : नई दिल्ली ,पलवल, फ़रीदाबाद, अमृतसर, जालंधर, मोगा, रांची, ग़ाज़ियाबादराज्य:दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश	1 स्वास्थ्य 2 शिक्षा 3 महिला एवं बाल विकास 4 स्वच्छता
44	**श्री विवेक अत्रेअवनी महाराष्ट्र I-5, टीचर्स क्वार्टर्स, पुणे विश्वविद्यालय परिसर, गणेश खिंड रोड, पुणे**	**गोपाल पालीवाल**	**+91-20-24210879** **9422085872**		1 प्रशिक्षण 2 परियोजना विकास
45	**छत्रपति शिक्षण मंडलद्वारा, अभिनव ध्यानमंदिर, महाराष्ट्र, तिलक चौक, ध्यानमंदिर, कल्याण, थाने ताल.कल्याण, पश्चिम, थाने- 421301**	**श्री कुडु वेणुरथ विष्णु** सचिव	**0251-2209396** **0251-22009218** **097250866** **9226896299** csmandal_kalyan@rediffmail.com	प्रखंड कल्याण भिवंडी जौहर तलासरी मर्बद मनगांव ज़िले थाणे रायगढ़ राज्य महाराष्ट्र	1 शिक्षा 2 सामाजिक 3 संस्कृति
46	**डॉ.हेडगेवार सेवा समितिइंद्र सदन, लोकमान्य कॉलोनी, महाराष्ट्र मुख्य डाक कार्यालय के पीछे, ज़िला-नंदुरबार, 425412.**	**श्री विकास सोमनाथ गोडसे** विकास अधिकारी	**02564-223910** **240544** **9404749870** hssnandurbar@gmail.com	प्रखंड नंदूरबार तालुका- नंदुरबार ज़िला- नंदुरबारराज्य महाराष्ट्र	1 कृषि विज्ञान केन्द्र आईसीएआर नई दिल्ली 2 जनजातीय विकास कार्यक्रम नाबार्ड 3 प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय महाराष्ट्र सरकार

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
47	**दरवंकुर सामाजिक संस्था द्वारा-किरण नाना निचिते, रायगढ़ निवास, पोस्ट-खाटीवली, ज़िला-थाने महाराष्ट्र**		**+91-2527-222919**		
48	**गोविन्द महाराज गोपाल समाज विकास परिषद्, अंसरवाड़ा, पोस्ट-अंसरवाड़ा, महाराष्ट्र तालुका-निलांगदा, ज़िला-लातूर**	**श्री ज़ारे नरसिंग बाबुराव सचिव**	**9881433408** narsingz2015@gmail.com	प्रखंड : अंसरवाड़ा, तालुका-नीलंगा ज़िला :लातूर राज्य : महाराष्ट्र	1. शिक्षा 2. उद्योग,उद्योग प्रशिक्षण 3. छात्रावास 4. स्वास्थ्य
49	**श्री संजय काम्बले, जन - आधार - सेवाभावी संस्थान्, श्याम कुंज, महाराष्ट्र श्याम नगर, लातूर**		**+91-9923409153 9923409152**		
50	**जीजामाता सेवाभावी संस्था, द्वारा-**संतोष श्रीरामराव देशमुख महाराष्ट्र देशमुख निवास, मेन रोड, शिवाजी चौक, नया नांदेड़	**श्री संतोष रामराव देशमुख अध्यक्ष**	**02462-227624 8007001357 8421900557** santosh.deshmukh9875@gmail.com	प्रखंड : सिडको नांदेड़ ज़िला . नांदेड़ राज्य : महाराष्ट्र	1. ग्रामीण विकास 2. स्वयं सहायता समूह 3. महिला एवं बाल विकास 4. प्रशिक्षण कार्यक्रम
51	**नवदृष्टि,** डॉक्टर्स क्वार्टर्स, भवन संख्या-/V/06 महाराष्ट्र ईएसआईएस हॉस्पीटल परिसर, मुलुण्ड (पश्चिम), मुंबई	**श्री नागेश एस. टेकाले**	**022-2564687 99869612531** nstekale@gmail.com	प्रखंड : जौहर एवं विक्रमगड़ी ज़िला : पालघर राज्य : महाराष्ट्र	1. आश्रम स्कूल छात्रों के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल 2. स्वच्छता 3. महिलाओं के लिए शौचालय की रूप-रेखा निर्माण 4. सैनिटरी नैपकिन(निम्न लागत)
52	**मुक्ति निकेतन** पोस्ट ऑफ़िस-कटोरिया, बाँका-बिहार	**अनिरुद्ध प्रसाद सिंह**	**9006136143** muktiniketan@rediffmail.com		
53	**रामास्वामी एजुकेशनल एण्ड डेवलपमेंट ट्रस्ट (आरईएडी)** दुकान संख्या- 24, 1040 डीडीए फ़्लैट्स, रघुवीर नगर, दिल्ली	**वी. कविताएस. एम. अलगुवेल**	**011-25938803 7838987733 7838987711** readtrust1234@gmail.com	प्रखंड : तिजारा, वाड़ीपट्टी, झज्जर ज़िले: अलवर, मुदरई, झज्जर राज्य : राजस्थान, तमिलनाडू एवं हरियाणा	1 ग्रामीण शिक्षा 2 स्वास्थ्य 3 ग्रामीण जल एवं स्वच्छता 4 महिला सशक्तिकरण
54	**मदुरई नॉन फ़ॉर्मल एजुकेशन सेंटर (एमएनईसी)** 15, फ़ातिमा नगर, अन्नई थेरसा स्ट्रीट, बाई पास रोड, मुंबई	**पी.मनोहरन कार्यकारी निदेशक**	**98944 73003** mnecindia@gmail.com		
55	**सेंटर फ़ॉर बी डेवलपमेंट देशपाण्डे लेआउट नलवाड़ी, वर्धा**	**गोपाल पालीवाल**	**9423420485, 07152-247709** gopalpaliwal23@gmail.com cbd2000wardha@gmail.com		
56	**संतोष सिंह** निदेशक, डीडब्ल्यूएस मंत्रालय		**011 24364112**		

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
57	शिवगंगा ग्रामविकास ऑर्गेनाइज़ेशन	चिन्मन जैन			
58	श्रीयान म्युज़िक ग्रुप	श्रीमती रेखा भंडारी शर्मा, श्री राहुल कुमार, श्री शिवम् पाण्डेय, श्रीमती प्रीति आर्या			
59	जीएसडीएस	सुश्री उमा बरुरी, सुश्री रेणू पुहर, सुश्री शशी प्रभा, सुश्री नेहा			
60	आईएसआरएन	श्री संतोष गुप्ता			
61	ए.1, कल्याण आश्रम, जसपुर, छत्तीसगढ़	श्री कृपा पाल सिंह			
62	आईआईटी, दिल्ली	प्रोफ़ेसर वी.के.विजय	1126581687		
63	आईआईटी दिल्ली	प्रोफ़ेसर राजेन्द्र प्रसाद	9810742111		
64	जी.ओ.यू.फ़ेडरेशन, हैदराबाद	डॉ.श्रीनिवास राव सुरभि, संगठन सचिव	9540540945, goufederation@gmail.com	ज़िले नांदेड़ आदिलाबाद अकोहा राज्य तेलांगना महाराष्ट्र	1. गाय आधारित एकीकृत ग्रामीण विकास 2. पंचगंगा शोध 3.देसी पशुधन प्रजाति उन्नयन
65	विज़न रुरल डेलवपमेंट सोसाइटी, मेडक, ज़िला तेलांगना	श्री एस शरथ समन्वयक	9908523753 08452-233151 visionmedak@gmail.com	रम्यमपेट मेडक ज़िला-मेडक निज़ामाबाद राज्य-तेलांगना आंध्र प्रदेश	1.महिला एवं बाल विकास 2.कुशलता विकास प्रशिक्षण 3.स्वास्थ्य शिक्षा जागरूकता 4. बाल कल्याण एवं शिक्षा
66	सद्भावना ग्रामीण विकास संस्थान, बस्ती	श्री डी.एस.सिंह	9450575727 sjvs_bst@rediffmail.com	प्रखंड बस्ती सदर एवं कुद्राहा ज़िला-बस्ती राज्य-उत्तर प्रदेश	1.महिला उन्नयन ईआरडब्ल्यू कार्यक्रम 2. एमएनएच संबंधित मामले 3. आजीविका 4. स्वच्छता एवं जागरूकता
67	मुरीजुशा आर्ट रिसर्च फ़ाउंडेशन	श्री मनोज कुमार पाण्डेय, सचिव	9430612262, dushagum@yahoo.co.in, www.marijlubhaart.in	ज़िला-भागलपुर एवं दुमका राज्य-बिहार	1.प्रबंधन कला 2. शिशु 3. मबार्ड
68	वनवासी सेवा ऑर्गेनाइज़ेशन	श्री रोहताश सिंह रघुवंशी, समन्वयक	9868404002, nestcnetwork@gmail.com	प्रखंड-मियूपुर दुधीर ज़िला-सोनभद्र उत्तर प्रदेश	1. जल बीज प्रबंधन 2.ग्रामीण उद्योग 3. खादी एवं ग्रामोद्योग 4. पशु उद्योग एवं कृषि
69	तावड़ी विकास एण्ड सेवा ऑर्गेनाइज़ेशन, लाठी	श्री समशुद्दीन, सदस्य	09772779598, tawarivikaslb@gmail.com	प्रखंड सेदोवा ज़िला-जैसलमेर राज्य-राजस्थान	1. भूमि एवं जल विकास 2.महिला सशक्तिकरण

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
70	**महिला एण्ड एनवायर्नमेंट विकास ऑर्गेनाइज़ेशन, माउजमब**	**श्री आर.सी.सैनी,** सदस्य	**09829142013, 01428680843,** mepvs.dudu@gmail.com	प्रखंड-दुदु फेगी मालपुर ज़िला-जयपुर टूकी राज्य-राजस्थान	1भूमि एवं जल विकास 2महिला सशक्तिकरण 3आजीविका 4 संगठन
71	**फ़ेरु की देदी, चोड़**	**श्री फ़ेतन ख़ान, सदस्य**	**09983155156,** perasarvikassanstrian@gmail.com	प्रखंड-सैम,ज़िला-जैसलमेर,राज्य-राजस्थान	1. महिला सशक्तिकरण 2.स्वयं सहायता समूह 3. युवा
72	**कसूरबा गांधी इंस्टीट्युट फ़ॉर डेवलपमेंटक्वाकिथेल मोइरंग पुरेल लेइकई, इंफ़ाल**	**डॉ.ओ.सरीता देवी, सचिव**	**9436274808,** kasturba_kendra@yahoo.com		
73	**क्रियेटिव सीड्स,क्रियेटिव सोशल, एजुकेशनल एण्ड इकोनॉमिकल सोसाइटी, आंध्र प्रदेश**	**श्री बी.जयरामैया, प्रमुख**	**9247123699,** ankuramngotpt@gmail.com		1. पर्यावरण जागरूकता 2.स्वास्थ्य,पेयजल एवं स्वच्छता 3.स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण 4. जनजातीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक गतिविधियां
74	**आरईडीएटी**	**श्री आर. गोविन्दराजुलु,** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	**9486683402, 04142246679,** redat@rediffmail.com, redat@gmail.com	प्रखंड-पनरुती, अन्नाग्रामम, कुड्डालोर, उंदुरीपेट, सरम, मईलम, जिंजी, टिंडीवानम, ज़िला-ड्डालोर, विल्लीपुरम्, राज्य-तमिलनाडू	1जएलजी-नाबार्ड 2 खादी के उत्पाद खिलौले)3कृषि ईख बीज नारियल 4वस्त्र मंत्रालय (स्वयं सहायता समूह)5 अल्पसंख्यक मंत्रालय स्वयं सहायता समूह)
75	**आदिवासी रुरल डेवलपमेंट उत्नूर, आदिलाबाद, ज़िला टी.एस.सोसाइटी**	**श्री मदन लाल जाधव,** मुख्य सचिव	**9441374071,** ards.ngdo@gmail.com, ards_ngdo@rediffmail.com	प्रखंड-झालाराम, गंधारी, येल्लारेड्डी, ज़िला-निज़ामाबाद-503145, राज्य-तेलंगाना,टीएस	1 जनजातीय विकास 2 महिला एवं बाल विकास3शिक्षा कार्यक्रम 4कुशलता विकास कार्यक्रम
76	**शिक्षक संचालित शिक्षण संस्था,वाड़ा,ज़िला पालघर,पिन-421303**	**श्री नारायण केशव राव फड़के,सचिव**	**9422681951, 02526271466, nkphadke56@gmail.com**	प्रखंड-वाड़ा ज़िले-पालघर थाणे राज्य-महाराष्ट्र	1शिक्षा 2 वनवासियों(आदिवासी) के लिए छात्रावास3सामाजिक
77	**अंत्योदय चेतना मंण्डल, रंगामाटिया, पोस्ट-रासगोविन्दपुर,ज़िला-मयूरभंज**	**श्री आदित्य पटनायक** सचिव	**9234895922** gramdidi@gmail.com	प्रखंड :जगदीशपुर, नाथनगर, सबौर ज़िला : भागलपुर तथा बांका राज्य : बिहार	1. एसएचजी निर्माण (200 एसएचजी) 2. क्रेडिट लिंकेज 3. स्वच्छता नैपकीन प्रशिक्षण 4. एचपीजीएल स्वास्थ्य शिविर
78	**उड़ान सोसाइटी, 8/140, रघुवीरपुरी,जीटी रोड, अलीगढ़ उत्तर प्रदेश**	**श्री ज्ञानेन्द्र मिश्रा,** अध्यक्ष	**9837067681, 05716450159,** udaansociety@gmail.com	प्रखंड-अलीगढ़ सरगुजा ज़िला-राजनद गांव राज्य-उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़	1. बाल अधिकार 2.जल एवं स्वच्छता
79	**परिवार विकास, चंद्रशेखरनगर**	**श्री भावानंद,सचिव**	**08002028002,** parivarvikas@rediffmail.com	प्रखंड-गिद्धौर बड़हर लक्ष्मीपुर ज़िला-जमुई राज्य-बिहार	
80	**सेवा इंटरनेशनल, दिल्ली**	**श्री अभिषेक कुमार,** परियोजना समन्वयक	**7544007430,** abhishekkumar.jgd@gmail.com	ज़िले-चमोली रूद्र प्रयाग राज्य-उत्तराखंड	1.महिला सशक्तिकरण 2.शिक्षा 3. कुशलता विकास 4. पारितंत्र

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
81	**सेवा इंटरनेशनल, दिल्ली**	**श्री निशांत अग्रवाल,** कार्यक्रम प्रबंधक	**9910550176,** nishant.aggarwal@gmail.com	प्रखंड-कर्मप्रयाग, अजस्त्रम, ज़िले-रूद्रप्रयाग, चमोली, राज्य-उत्तराखंड	1. महिला सशक्तिकरण 2. शिक्षा
82	**वसेरा**	**श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा,** वसेरा, सचिव	**8182831519,** vaseradk.@gmail.com	प्रखंड-कुरेशना,ज़िला-एलाहाबाद, राज्य-उत्तर प्रदेश	1.स्वयं सहायता समूह 2. स्वच्छता 3. पर्यावरण
83	**सिद्धेश्वर ग्रामीण अभिवृद्धि संघ**	**श्री शाहीमॉली कुलकर्णी,** अध्यक्ष	**9448309825, 08362783425,** shashimoulik@gmail.com, syasangha@gmail.com	प्रखंड-धारवाड़,ज़िला-धारवाड़,राज्य-कर्नाटक	1. पेयजल 2. स्वच्छता 3. कुशलता प्रशिक्षण 4. कृमि आधारित जल संरक्षण
84	**वीएनएस किजान विद्यालय समिति, ग्राम-पत्थरताल, कोरांव, इलाहबाद उत्तर प्रदेश**	**श्री उदित नारायण शुक्ला,** प्रमुख	**09415676049,** ceo.sanjeevani@gmail.com		1.किसानों के.स्वयं सहायता समूह का निर्माण 2. किसानों के जेएलजी का निर्माण 3. किसानों के उत्पादक समूह का निर्माण 4. कार्बनिक खेती
85	**सरगुजा ज्ञानोदय एसोसिएशन**	**श्री डी.डी.द्विवेदी,** सचिव	**9889714507**	**State- Whole State**	1.शिक्षा.स्वास्थ्य 2. वी.टी.पी. कार्यक्रम 3. विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए विद्यालय
86	**सघन क्षेत्र विकास संस्था**	**श्री संतोष कुमार सिंह, सचिव**	**9451868044,** kmritic70@gmail.com	**Block- Servapur, Distt. Varanasi, State- U.P**	1. स्वास्थ्य 2. कृषि 3. के.वी.आई.ई.खादी एवं ग्रामीण उद्योग
87	**उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक**	**सुश्री निधि सवा पुरी, वाराणसी लाल बहादुर राय,** सचिव	**9450002193**		1. विद्यालय एवं ग्रामीण उद्योग 2.कृषि 3. शिक्षा कार्यक्रम 4. गांधी विद्यालय
88	**भुर्तिजा खोड़ी ग्रामोद्योग परिश्थान**	**श्री अमित रुहेला**	**9760806400,** amitsinghruhela@gmail.com	**Distt.- Hapur, State- U.P**	1.खादी एवं ग्रामीण उदोयग
89	**सिद्धगिरी गुरुकुल फ़ाउंडेशन**	**श्री योगेश एस.केदार,** प्रतिनिधि	**8554835213,** yskedar4@gmail.com	**Block- Kagal, Distt.- Kolhapur, State- Maharashtra**	1. शिक्षा 2. कृषि 3. गोशाला 4. हॉस्पीटल
90		**श्री कृशन कुमार,** सलाहकार	**9350253165**	**Block- Roi, Distt. - Sonepat, State- Haryana**	1.शोध एवं विकास 2. आध्यात्मिक
91	**जल प्रीवादरी, बिहार**	**श्री अमर नाथ ठाकुर,** समन्वयक	**9308189053,** amarnath.thakur@gmail.com		1. संचार एवं प्रकाशन 2. शोध एवं प्रकाशन 3. प्रशिक्षण सामर्थ्य निर्माण
92		**डॉ.राजा राम यादव, डॉ.तेजा राम,** अध्यक्ष	**09868850057,** rryadavarve@gmail.com	प्रखंड-रेवाड़ी,ज़िला-रेवाड़ी,राज्य-हरियाणा	1.प्राकृतिक गुणों का उन्नयन 2.एकीकृत कार्बनिक 3. गाय आधारित कृषि 4. गाय आधारित औषधि 5. गाय आधारित वाष्प
93		**डॉ.तेजा राम,** 10X फ़र्म	**9868850057**	प्रखंड-लोखा-ज़िला-बीकानेर,राज्य-राजस्थान	1. गाय आधारित औषधि उन्नयन

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
94	**समाज कल्या माउल**	**श्री साधुर शरण सिंह**	**9386701416**	प्रखंड-हिलसा ज़िला-नालांदा राज्य-बिहार	1.सिंचाई 2. प्रशिक्षण
95	**ऐबगस ऑर्गेनाइज़ेशन एण्ड** सेक्ट-12, टी-13, मल्थन प्लाज़ा, पॉकेट-7	**सुश्री सुचित्रा,** कार्यक्रम अधिकारी	**9560714682,** suchitra.rani90@gmail.com	प्रखंड-तिजावेर,ज़िला-अलवर,राज्य-राजस्थान	1. सामर्थ्य निर्माण 2. सशक्तिकरण 3.सहभागिता
96	**मदुरई नॉन फॉर्मल एजुकेशन सेंटर**	**श्री पी.मनोहरन,** निदेशक	**9894473003, 04522386135,** mnecindia@gmail.com	प्रखंड-ट्रिंक,ज़िला-मदुरई,राज्य-तमिलनाडू	1. महिला सशक्तिकरण 2.बाल विकास t3. एड्स 4. ग्रामीण विकास
97	**ग्रोथ फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया,**एल-46, मालवीय नगर, नई दिल्ली	**सुश्री प्रिया यादव, संचार दल** सदस्य एवं परियोजना संयोजक	**9811900701, 9716410900,** pyadav0900@gmail.com	उत्तरांचल और दिल्ली	1.ग्रामीण विकास
98	**ए.बी.वानारसी कल्याण,** आश्रम,जोशपुर नगर-496331, छत्तीसगढ़	**श्री कृपा प्रसाद सिंह**	**9431107424, 9406256356,**		1. कार्बनिक खेती 2. बायोगैस,सौर ऊर्जा 3. जल प्रबंधन 4. स्वयं सहायता समूह एवं अन्य आर्थिक विकास
99	**प्रपंभ समाज सेवी संस्था**	**श्री दीप नारायण शुक्ला,** सचिव	**8400812442,** deep.shukla.101@gmail.com	ज़िला-इटावा,राज्य-उत्तर प्रदेश	1. सेवाश भारत अभियान,स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य कला 2. युवाओं में उनके नेतृत्व विकास के लिए कार्य 3. युवाओं के लिए ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 4.बेहतर भारत के लिए सर्वेक्षण,पारीरोह कार्यक्रम,स्वयंसेवी दृष्टिकोण
100	**दिव्य ज्योति संस्थान्,** पॉकेट ओसीएफ़, पीतमपुर, दिल्ली	**श्री नवीन जोशी,** जन संपर्क प्रबंधक	**9958460402,** joshinaveenchander@gmail.com		1. सामाजिक परियोजन 2. युवा कल्याण विकास कार्यक्रम 3. कॉर्पोरेट कार्यशाला 4. आध्यात्मिक,सांस्कृतिक कार्यक्रम
101	**सखी री विकास संस्थान्**	**सुश्री ऊर्मिला,प्रबंध न्यासी एवं सचिव**	**9430673394,** urmilabasantpur@gmail.com	प्रखंड :जगदीशपुर, नाथनगर, सबौर ज़िला : भागलपुर तथा बांका राज्य : बिहार	1. महिला सशक्तिकरण 2. पंचायती राज 3.शिक्षा 4.विधिक
102	**साधोव्नसी सेवा एरम् शिक्स**	**श्री ओम प्रकाश,** दुर्गम क्षेत्र के कार्यकर्ता	**9455532146,** ssess2008ngo@yahoo.com	**Distt.- Allahabad, State- U.P**	1.कृषि एवं ग्रामीण विकास 2. ग्रामीण विकास 3. रोज़गार सशक्तिकरण एवं कृषि विकास
103	**डॉ.भीम राव अंबडकर ग्राम विकास समिति,** चेतनीपुर, ग्राम भडोनी	**श्री राहुल,** दुर्गम क्षेत्र के कार्यकर्ता	**9450689082,** rajaro991@gmail.com	**Block- Orahi, Distt.- Bhadohi, State- U.P**	1. शिक्षा 2. स्वास्थ्य 3. विकास
104	**शिवगंगा समग्र ग्रामविकास परिषद,** 86, पलसिकर कॉलोनी, इंदौर, मध्य प्रदेश	**श्री महेश शर्मा,** अध्यक्ष	**09425322150, 07312700259,** shivgangajhabua@gmail.com	ज़िला-झाबुआ राज्य-मध्य प्रदेश	1. ग्रामीण विकास के लिए प्रेरणात्मक कार्यक्रम 2. 2005 से जनजातीय युवा के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम(सशक्तिकरण वर्ग)3. जनजाती आबादी के सामूहिक सहभागिता के साथ सूक्ष्म तथा स्थूल स्तर पर जल संरक्षण 4.बांस शिल्प के लिए प्रशिक्षण 5.वन संरक्षण (मातानु वैन)

क्र.सं.	एनजीओ के नाम और पता	भाग लेने वालों के नाम और पद	संपर्क	संचालन क्षेत्र	महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र
105	**नारी-ओ-शिशु कल्याण केन्द्र**	**सुश्री रहिमा ख़ातून, सचिव**	**9830646876,** nskk1479@gmail.com	प्रखंड-उलीबैरिया ज़िला-हावड़ा राज्य-पश्चिम बंगाल	1 स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिला सशक्तिकरण 2 स्वास्थ्य 3 शिक्षा 4 आजीविका
106	**यूथ फ़ॉर सस्टनेबल डेवलपमेंट**	**श्री बिहार लाल शर्मा,** कार्यकारी निदेशक	**9418014280, 01772811155,** bihariysd@gmail.com	राज्य-हिमाचल प्रदेश	1 सार्वजनिक स्वास्थ्य चलंत चिकित्सा कॉल इकाई रक्त दान 2 पर्यावरण सुरक्षा के लिए वृक्षारोपण 3 कृषक एवं युवा के लिए जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम
107	**जीएसडीएस गांधी दर्शन**	**सुश्री शाश्वती झालानी, लाइब्रेरियन, जीएसडीएस**	**9810696642, 23392709**		1 यूरी सैनिटेशन द्वारा संचालित सभी कार्यक्रम
108	**यरसत्ते**	**श्री प्रमोद शर्मा, संयोजक, यरसत्ते**	**9872609816, 0172329855,** yursatte@gmail.com		1 सशक्तिकरण को लेकर प्रोजेक्ट ब्रिज 2 कन्याओं के अधिकारों को लेकर गर्ल्स स्टार प्रोजेक्ट
109		**श्री वी.के.कातल,** चीफ़ एक्ज़क्यूटिव	**9419159424, 01912572698,** nileojammu@yahoo.com	ज़िले-जम्मू डोडा राज्य-जम्मू एवं कश्मीर	1 कुशलता विकास 2 ग्रामीण विकास
110	**ग्रोथ फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया, एल-46,मालवीय नगर, दिल्ली**	**श्री निर्मल पाठक,** सीईओ	**9899114797, 24646745,** nirmalpathak@hotmail.com	राज्य-उत्तरांचल	1 ग्रामीण विकास 2 महिला एवं बाल विकास 3 पर्यावरण
111	**गोपाल सेवा**	**श्री रामगोपाल अग्निहोत्री,** सदस्य	**9868893106,** gopalsewa@gmail.com		1 बायोगैस विकास 2 जैविक खेती
112		**श्री बसंत,** कर्मचारी	**09955238818,** basant_rkp@rediffmail.com		1 शिल्पी-कारीगर 2 कृषि 3 संपर्क संजाल
113	**शिवगंगा सरम् ग्रामीण विकास परिषद्,** आईआईटी कॉलेज स्टूडेण्ट को-ऑर्डिनेटर	**श्री चिन्मय जैन**	**9971480012**		1 ग्राम विकास 2 जल विकास 3 वन सुरक्षा 4 भूमि सुरक्षा
114	**श्री अरुण कुमार बंसल,** राष्ट्रीय समन्वक, उद्योग प्रकोष्ठ, भाजपा		**9313998191, 01127932280,** arunbansal07@gmail.com		1 प्रौद्योगिकी के लिए समंजीकरण 2 वित्तीय संरचना का एकीकरण 3 औद्योगिक विकास नीतियां 4 ग्रामीण विकास नीतियां
115	**श्री मनीष मंजुल,समर्थ,** महासचिव		**9313103060, 01124312070,** mjk@samarth.co.in		1 शिक्षा 2 स्वास्थ्य
116	**सैसर्ग (सेन्कॉरेड), पटना, बिहार**	**श्री विश्वास गौतम,** स्वयंसेवी	**9430625810** vishvasg2015@gmail.com	प्रखंड-बोचहां ज़िला-मुज़फ़्फ़रपुर राज्य-बिहार	1 पीआरआई प्रतिनिधि सामर्थ्य 2 स्वयं सहायता समूह प्रोत्साहन 3 आजीविका प्रोत्साहन 4 गांवों में ग्रामीण स्वच्छता

Council for Advancement of People's Action and Rural Technology

PUBLICATION

The Media Division of CAPART is responsible for supporting CAPART project divisions with communications materials and in coordinating the production of audio-visual and print learning/training materials for use by the voluntary sector. This division has supported the production of a number of films on different development themes by film-makers of national standing as well as by young innovators.

CAPART also publishes a range of books, magazines and journals, which enjoy a wide circulation in the voluntary sector. A network of 25 development resource centres, the Communications Resource Network (CRN), has been initiated by the Media Division, which is geared to collecting and disseminating development communication materials developed by different field- based groups.

CAPART PUBLICATIONS

Prayas (Success Stories)
Honey From Rock Bees
Pyrolysis And Briquetting
Carcass Utilization
Rain Water Harvesting
Fuel Efficient Crematorium
Red Clay Pottery
Hydraulic Ram Pump Building - Roof
For The Roofless Artificial Reefs
People's Action (bi-monthly)
A magazine for the voluntary sector.
TRC Bulletin
CAPART Newsletter

For more information about Books & Videos

Please visit

www.capart.nic.in/pub

For copies and further details, kindly contact :
Media Division, CAPART, Zone - 5A, 2nd floor
India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi, PIN-110003.
(Tele-011-24642395)